द्वितीय
अध्याय
व्यंग्य साहित्य की
परंपरा

द्वितीय अध्याय

व्यंग्य साहित्य की परंपरा

२.१	**प्रस्तावना**
२.२	**भारतीय साहित्य में व्यंग्य की परम्परा**
२.२.१	वैदिक साहित्य में व्यंग्य
२.२.२	संस्कृत साहित्य में व्यंग्य
२.२.३	प्राकृत साहित्य में व्यंग्य
२.२.४	अपभ्रंश साहित्य में व्यंग्य
२.३	**पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य परम्परा**
२.४	**हिंदी साहित्य में व्यंग्य परम्परा**
२.४.१	वीरगाथाकाल में व्यंग्य
२.४.२	भक्तिकाल में व्यंग्य
२.४.३	रीतिकल में व्यंग्य ।
२.४.४	**आधुनिक काल में व्यंग्य**
२.४.४.१	आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य
२.४.४.२	आधुनिक हिंदी उपन्यास में व्यंग्य
२.४.४.३	आधुनिक हिंदी कहानी में व्यंग्य

द्वितीय अध्याय

व्यंग्य साहित्य की परम्परा

२.१ प्रस्तावना :

जिस समय से साहित्य सृजन का आरम्भ हुआ, उसी समय से व्यंग्य का भी अरम्भ हो गया है । साहित्य में व्यंग्य कुछ इस भाँति घुला-मिला रहा है जैसे दूध में मख्खन रहता है । उसका पृथक अस्तित्व स्पष्ट न होते हुए भी वह अपना प्रभाव छोड़ता रहा है और लक्ष्य - सिद्धि प्राप्त करता रहा हैं। हालांकि प्रतिभावान लेखक तथा कवि तो दिन-रात इसके सृजन में लगे हुए थे । व्यंग्य साहित्य की विधाओं के साथ (लता) बेल के समान लपेटकर कभी महाकाव्यों में, तो कभी काव्यों में तो कभी उपन्यास में, तो कभी कहानी में, कभी नाटक में, तो कभी निबंध में, उभरता रहा है । केवल नामाभिधान अप्रस्तुत रहा है । भिन्न-भिन्न भाषाओं में उसे विविध संज्ञा से पहचाना जाता रहा है और महसूस किया जाता रहा है । भारतीय भाषाओं की जननी संस्कृत में व्यंग्य शब्द का प्रयोग निंदा इस अर्थ में प्रायः दृष्टिगोचर होता है । कहीं - कहीं अन्योक्ति तथा व्याजोक्ति को लेकर भी संबोधन है । संस्कृत में निंदा, अन्योक्ति तथा व्याजोक्ति को लेकर अनेक प्रकार की रचनाएँ उपलब्ध है ।

प्राकृत साहित्य में धूर्तों की पोल खोलकर व्यंग्यकार ने सशक्त प्रहार किये है । अपभ्रंश साहित्य में मिथ्याचार तथा प्रचलित अन्धविश्वासों पर आक्रोशयुक्त, निन्दात्मक तथा भर्त्सनात्मक व्यंग्य किया है । हिन्दी साहित्य के बारे में डॉ. उषा शर्मा लिखती है, "जब व्यंग्य परम्परा की खोज की जाती है, जो आज जितना परिष्कृत तो नहीं है, किन्तु लक्ष्य - सिद्धि के लिए व्यंग्य का प्रहार आज जितना ही तीक्ष्ण था ।"[१]

हिन्दी साहित्य के अध्ययन द्वारा ऐसा ज्ञात होता है कि,हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विद्यमान तो था, किन्तु इसकी न कोई निश्चित परम्परा थी और न कही कोई सुनिश्चित स्वरूप था । कुछ समीक्षकों का या विद्वानों का मत है कि, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से ही पनपा है । परन्तु यह भी सत्य नहीं है कारण अंग्रेजी के पूर्व प्राचीन भारतीय साहित्य में व्यंग्य मिलता है । वैदिक काल में ''चार्वाक'' ने कर्मकाण्डों की खिल्ली उड़ाई है, वैदिक कर्मकाण्ड एवं ब्राम्हण धर्म पर तीव्र प्रहार किये है । संस्कृत साहित्य में 'हितोपदेश एवं पंचतन्त्र' की कुछ कथाओं में तत्कालीन विसंगतिओं, अनीतियों एवं दुर्बलताओं पर सशक्त व्यंग्य किया गया है । प्राकृत में हरिभद्र सुरि के 'दश-वैकालिक टाक' और 'उपदेश पद' के अन्तर्गत लघु व्यंग्य कथायें संग्रहित हैं । अपभ्रंश साहित्य में जैनियों तथा सिद्धों ने दोहों, चौपाइयों एवं चर्यागीतों में उपहास उडाते हुए व्यंग्योक्तियाँ लिखी है । इस प्रकार बीज रूप में भारतीय वाङ्मय में व्यंग्य के उपलब्ध होने के प्रमाण मिलते है ।

२.२ भारतीय साहित्य में व्यंग्य :

भारतीय साहित्य में व्यंग्य का अस्तित्व वैदिक काल से ही विद्यमान रहा है । वेदों में व्यंग्य के प्रमाण मिलते है, किन्तु नाट्यशास्त्र में व्यंग्यात्मकता के स्पष्ट संकेत है ।

२.२.१ वैदिक साहित्य :

भारतीय साहित्य में वैदिक काल से व्यंग्य का अस्तित्व विद्यमान रहा है । यज्ञों में ऊँचे ऊँचे स्वरों में मंत्रोच्चारण किया जाता था । सम्भवत : इन्ही आडम्बरों की निस्सारता को दृष्टि में रखकर ऋषिओं के मंत्रोच्चारण के नाद की तुलना बरसाती मेंढकों की टर्र- टर्र से की गयी है । चार्वाक ने वैदिक कर्मकाण्डों

की खिल्ली उड़ाई है । चावार्क की व्यंग्यपूर्ण सूक्तियों ने वैदिक कर्मकाण्ड एवं ब्राम्हण धर्म पर तीव्र पहार किया है । चार्वाक ने पिण्डदान की खिल्ली उड़ाई है, तथा स्वर्ग - मोक्ष की परिकल्पना को नकारा हैं । "अत: वैदिक साहित्य में अन्य धार्मिकता एवं धर्म की आड़ में फैली विसंगतियों पर ही व्यंग्य मिलता है।"[२] वैदिक काल में आर्य धार्मिक प्रवृत्ति के थे आर्यों का जीवन अग्निकुण्ड, यज्ञ, कर्मकाण्ड एवं आहुतियों के चहुँ ओर घुमता था । धर्म की आड़ फैली इन विसंगतियों पर वैदिक साहित्य में व्यंग्य मिलता है ।

२.२.२. संस्कृत साहित्य में व्यंग्य :

संस्कृत काव्यशास्त्रों में भी व्यंग्य का विवेचन बीज रूप में हुआ है । संस्कृत साहित्य में न् तो व्यंग्य की कोई स्पष्ट परम्परा बनी और न ही स्वतन्त्र अस्तित्व मिलता है । पुराणों और आख्यानों में तत्कालीन प्रचलित कुप्रथाओं, कुरीतियों एवं अन्यायों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये गये है । "वाल्मीकि" कृत रामायण तथा महाभारत के कई प्रसंगो में व्यंग्य विद्यमान है । द्रौपदी एवं दुर्योधन सम्बन्धी एक प्रसंग में तो इतने विषाक्त व्यंग्य का स्वरूप मिलता है । जो घोर शत्रुता का कारण बन गया है । "पांडवो ने मय राक्षस द्वारा एक भव्य महल का निर्माण करवाया । उसमें रचना इस प्रकार की थी कि, स्थल जल के समान और जल स्थल के समान लगता था । दुर्योधन जब उस महल को दखने आया तो पहले जल में गिर पड़ा । दुबारा उसने स्थल को जल समजा और वह अपने वस्त्रों को समेटकर आगे बढ़ा । इस पर द्रौपदी ने कटूक्तिपूर्ण उपहास किया कि, अन्धे की सन्तान अन्धी ही होगी ।"[३] द्रोपदी की यह व्यंग्य उक्ति महाभारत युद्ध का कारण बन गयी और कुरू वंश का विनाश हुआ ।

संस्कृत में व्यंग्य शब्द का प्रयोग निंदा इस अर्थ में प्राय : दृष्टिगोचर होता है । कहीं-कहीं अन्योक्ति तथा व्याजोक्ति को लेकर अनेक प्रकार

की रचनाएँ संस्कृत में उपलब्ध हैं । लक्ष्मी या धन की नशा के संदर्भ में सटीक प्रहार युक्त श्लोक इस प्रकार है ।

"क्षणमात्रं ग्रहावेशो याममात्रं सुरामद : ।

लक्ष्मीमदस्तु मूर्खाणामादेहमनुवर्तते ।"[४]

अर्थात - हम पर ग्रह, ज्योतिष की, अपशकुन की बाधा थोडे ही समय होती है । शराब की नशा भी कालांश होती है, लेकिन लक्ष्मी की नशा, अमीरी की नशा मूर्ख लोगों के शरीर में अंत तक होती है । मूर्ख व्यक्ति अगर अमीर बना, तो उसके होने वाले परिणामों पर यहाँ सीधा प्रहार किया गया है ।

संस्कृत साहित्य में सांगधरा लिखित "शांर्गधरा पद्धति" में समृद्ध निन्दा साहित्य मिलता है । इसमें तृष्णा निंदा, कायस्थ निंदा, दुर्जन निंदा, याचक निंदा एवं कुपुत्र निंदा आदि रचनायें प्राप्त होती हैं । इसमें दुर्जन निंदा का उदाहरण इस प्रकार है,

" न विना परवादेन रते दुर्जनो जन : ।

काक : सर्वरसान्भुक्ता विनामेध्यंन तृप्यति ।"[५]

यहाँ दुर्जनों पर निंदा की गयी है । दूसरों की निंदा किये बगैर दुर्जन को तसल्ली नहीं मिलती है। जैसे कौवा सभी रसों का आस्वाद लेने के बावजूद भी उसे गंदगी खाए बिना तृप्ति नहीं मिलती, वैसी स्थिति दुर्जनों की हैं। इस प्रकार 'शांर्गधरा पद्धति' में व्यंग्य की स्पष्टोक्ति होती है ।

संस्कृत में भोज - 'प्रबंध सुक्ति मुक्तावली', कालीविडिम्बर- 'सुभाषितरत्न भांडागारशम्काव्यतीर्थ', कुवलयानन्द - 'अप्पा', 'दीक्षित' 'सुभाषितावालि', वल्लभदेव 'भामिनी विलास', चौरपंचासिका', बिल्हण

'अन्योपदेश', 'अन्योक्तिमाला', लक्ष्मीनर सिंह - 'अन्योक्ति शतक', सोमनाथ- 'अन्योक्ति काव्य' तथा 'अन्योक्ति मुक्तामाला' आदि व्यंग्य संबंधी साहित्य लिखा है, इस प्रकार संस्कृत में व्यंग्य की धारा प्राप्त होती है ।

संस्कृत साहित्य में व्यंग्य को प्राय: ध्वनि और अलंकार सम्प्रदाय के अन्तर्गत ही लिया गया है। श्लेष अन्योक्ति, व्याजोक्ति, स्तुति, व्याज निन्दा आदि अलंकारों के रूप में संस्कृत साहित्य में व्यंग्य प्रचूर मात्रा में मिलता है ।

२.२.३ प्राकृत साहित्य में व्यंग्य :

प्राकृत साहित्य का सृजन अधिकांशत: धार्मिक मान्यताओं की स्थापना के लिये हुआ था । अत : उस काल में अन्य विषयों की ओर ध्यान देने का शायद अवकाश ही नहीं था । सम्पूर्ण प्राकृत साहित्य के इतिहास में 'हरिभ्रद सुरि' का नाम व्यंग्यकार के रूप में लिया जा सकता है । ''दशवैकालिक टाक और उपदेश पद'' के अन्तर्गत हरिभद्र सुरि के लगभग पन्द्रह सशक्त लघु व्यंग्य कथायें संगृहीत है । लेकिन हरिभद्र की व्यंग्य कीर्ति का मुख्य आधार 'धुत्ताख्यान' है । इसमें धूर्तों की पोल खोलकर व्यंग्यकार ने सशक्त प्रहार किये हैं । इनका व्यंग्य निराशावादी न होकर मृदु तथा आशावादी सुधारक रूप लिये हुआ है। संक्षेप में प्राकृत साहित्य में व्यंग्य का स्वरूप प्राय: नगण्य रहा है ।

२.२.४ अपभ्रंश साहित्य में व्यंग्य :

अपभ्रंश साहित्य का विचार किया जाय तो, इसमें ब्राम्हण धर्म पर व्यंग्य किया गया है । धर्म के अनेक आख्यानों और घटनाओं को विसंगत प्रदर्शित करते हुए, जैन धर्म के प्रति आस्था और श्रद्धा उत्पन्न करने का प्रयत्न किया गया है । सिद्ध, सीधे - सादे मस्तमौला जीव थे । वे पाखण्ड बाह्याडम्बर एवं अन्धविश्वासों को मानते नहीं थे । इसलिये सिद्धों ने, तत्कालीन कुरीतियों,

विसंगतियों आदि पर अपने दोहो,चौपाइयों एवं चर्यागीतों में उपहास उड़ाते हुए व्यंगोक्तियाँ लिखी है। 'कन्हपा' आहैर 'सरहपा' आदि सिद्धों की रचनाओं में खण्डनात्मक अंशो में व्यंग्य निहित है ।

धम्म परिक्खा में अपभ्रंश कवि ने बड़ी तीव्रता से पुराणों की निंदा करके जैन धर्म को थोपने का यत्न किया है ।

जैसे -

"अंगुल्या क:कपाटं प्रहरति, कुटिले माधव :

किं विसंतो नो चक्री, किं कुलालो, न हि धरणिधर :

किं द्विजव्ह:फणींद्र ।

नाहं घोराहि मर्द्यी,किमसि खगपति नों हरि :

किं कंपीश:इत्येवं गोपवध्वा प्रहसितवदन : पातु वरचक्रपाणि: ॥[६]

इस पंक्तियों का मतलब इस प्रकार है कि, ब्राम्हण धर्म की अनेक अविश्वसनीय और असत्य बातों की ओर निर्देश कर मनोवेग ब्राम्हणों को निरूत्तर करता है । इसी प्रसंग में वे कहते है कि राम जो सृष्टि प्रलय आदि के भी ज्ञाता हैं, तो फिर अपनी नारी के हरण को कैसे न जान पाये ? और फिर उसके विषय में वन-वन पशु-पंछी को क्यों पूछते फिरे ?

'पाहुडदोहा' अपभ्रंश-ग्रंथ में कवि रामसिंह ने तीर्थयात्रा, मूर्तिपूजा, मंत्र-तंत्र पर व्यंग्य के प्रहार किये तथा इनका निषेध किया है । कवि ने भक्तों की शिव आराधना को देखते हुए लिखा है कि -

"पत्तिय तोडि मजोइया फलहिं जिहत्थुम वाहिं जसु कारणि तोडेहि तहूं सो सिउ उत्थु चडाहि ॥"[७]

कवि रामसिंह ने स्पष्टत:फल तोड़कर शिवाजी पर चढाने वालों पर तीखा प्रहार करते हुए स्पष्ट किया है कि, यदि शिव को बेल-की पत्ती प्रिय है,तो उस शिव को ही क्यों न वृक्ष पर चढ़ा दिया जाए ।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि, अपभ्रंश साहित्य में तत्कालीन कुरीतियों, विसंगतियों, पाखण्ड, बाह्यडाम्बर एवं अन्धविश्वासों पर अपने दोहों, चौपाइयों एवं चर्यागीतों में उपहासात्मक,निन्दात्मक तथा भर्त्सनात्मक व्यंग्य किया है । इससे स्पष्ट होता है कि, अपभ्रंश साहित्य में व्यंग्य होने की परिपुष्टि मिलती है ।

भारतीय वाङ्मय में वैदिक काल से व्यंग्य का अस्तित्व विद्यमान रहा है । संस्कृत काव्यशास्त्रों में भी व्यंग्य का विवेचन बीजरुप में किया गया है । संस्कृत साहित्य में व्यंग्य को प्राय:ध्वनि और अलंकार सम्प्रदाय के अर्न्तगत ही लिया गया है । प्राकृत साहित्य में व्यंग्य का स्वरुप प्राय:नगण्य रहा है, तथा हरिभद्र सुरि का नाम प्राकृत व्यंग्य साहित्य में उल्लेखनीय है । एवं अपभ्रंश साहित्य में जैनियों,सिद्धों द्वारा बाह्य अनुष्ठानों का खण्डन किया गया हैं । इस से स्पष्ट होता है कि, भारतीय साहित्य में व्यंग्य का अस्तित्व वैदिक काल से विद्यमान रहा है ।

२.३ पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य परंपरा :

प्रस्तावना :

पाश्चात्य साहित्य में व्यंग्य का उद्भव एवं विकास सर्वप्रथम रोमन,ग्रीक और तपश्चात अंग्रेजी साहित्य में स्पष्ट रुप में दिखायी देता है,

जिसमें रोम के प्रथम व्यंग्यकार लुसीसियन ने तत्कालीन राजनीति, धार्मिकता, अंधविश्वास, आदि पर व्यंग्य रचनाएँ लिखी है । अंग्रेजी साहित्य के प्रारम्भिक व्यंग्यकारों में चौसर का स्थान महत्वपूर्ण है, चौसर का व्यंग्य कटु एवं विद्वेष पूर्ण न होकर मृदू और रोचक है । ग्रीक साहित्य में आरकी लोकस, एमोरगस और हिप्पोनैक्स इन्होंने नैतिकता एवं आचरण संबंधी सुधार भाव से व्यंग्यात्मक रचानाएँ लिखी है । व्यंग्यं को प्रथमत: पाश्चात्यों में मानते हुए डॉ. रामखेलावन पाण्ड्ये लिखते है कि, "विश्व-साहित्य के संदर्भ में देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि, व्यंग्य का बुटा सर्वप्रथम पाश्चात्य साहित्य में प्रस्फुटित हुआ, इस के साथ व्यंग्य बीज रुप में भारतीय वाङमय में भी उपलब्ध था ।"[८]

विश्व साहित्य के अध्ययन द्वारा ऐसा ज्ञात होता है कि, हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विद्यमान तो था, किन्तु इसकी न काई परम्परा थी और न कोई सुनिश्चित स्वरुप था । कुछ समीक्षकों का या विद्वानों का मत है कि हिन्दी साहित्य में व्यंग्य अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से ही पनपा है । परन्तु यह भी सत्य नहीं है कारण अंग्रेजी के पूर्व प्राचीन भारतीय साहित्य में व्यंग्य मिलता है । 'ग्रीक साहित्य' में व्यंग्य स्वाभाविक रुप में निहित रहा है । इसकी विषय-वस्तु विशिष्ट न रहकर आचरण रही है, जैसे कोई आकस्मिक भाव, कोई घटना, किसी पर छींटाकशी, किसी की दुर्बलता पर वैदग्ध्य, हास्य,पैरोडी, विरोधाभास आदि रुप में व्यंग्य लिखा गया है, जो सर्वसाधारण की रुचि के लिए था । ग्रीक साहित्य के आरम्भिक युग में आरकीलोस, एमोरागस और हिप्पोनैक्स के नाम उल्लेखनीय है।

आरकीलोक्स श्रेष्ठ और महान थे । इनके व्यंग्य में अति कटुता एवं प्रहारात्मकता रहती थी, जो कट्टर नैतिकता और आचरण संबंधी सुधार भाव से ओतप्रोत होती थी । "एमोरगस और हिप्पोनैक्स के व्यंग्य में उल्लासपूर्ण

काल्पनिकता होती थी।''[९] ग्रीक सहित्य में अन्य प्रमुख व्यंग्यकार में वायन,कैलीमेजस, ओडेसी, मैडमैन आदि प्रमुख रुप से दिखाई देते हैं ।

रोमन साहित्य में व्यंग्य का जन्म 'रोमन कॉमेडी' के रूप में हुआ। रोमन व्यंग्य को 'सटुरा' कहते थे जिसका अर्थ विविध लिया जाता था । अत: 'सटायर' शब्द को गढ़ने का श्रेय रोमनों को ही हैं । रोमन साहित्य के व्यंग्यकारों में सर्वप्रथम 'लूसीलियस' का नाम आता है । इनके लगभग तीस काव्य-संग्रह हैं । इनके व्यंग्य की विषय वस्तु-''राजनीति, राजनीतिज्ञ, धार्मिक अंधविश्वास तथा दर्शन की बेतुकी बातें,साहसिक घटनाएँ, लोगों की झक्की और सनकीपन तथा स्वयं की रुचियाँ थीं ।''[१०]

रोमन व्यंग्यकारों में मुख्य रुप से हॉरेस, परसियस, जुवैनल,क्लोडियन,लुसीयन, और रोमन शास्त्रीय व्यंग्यकारों मे अन्तिम नाम है 'एम्परर जुलीयन' का जो ईसाई होते हुए भी विधर्मी (पेगन) हो गया था । उसने ईसाई धर्म पर आक्षेपात्मतक लेख लिखे । ''इस युग में प्राय:स्वगत कथन के रुप में व्यंग्य का प्राधान्य था । ईसाई युग आते-आते प्राय: स्वगत-कथन लोप ही हो गया ।''[११]

अंग्रेजी साहित्य में सोलहवी शताब्दी तक व्यंग्य मंथर गति से ही पनप रहा था । किन्तु सोलहवी शताब्दी के पाश्चात व्यंग्य सृजना की गति तीव्र रुप से दिखाई देती है, जिसमें मुख्य रुप से 'सेमुलर बटलर' जिनकी रचना 'हुडिबास' सम्भ्वत: इनके जीवन भर की रचना है । इसमें तीखा और हास्य-युक्त व्यंग्य है । इस ग्रंथ में ''ईसाई-मत के सभी पंथों, पाण्डित्याभिमान, स्त्रियों, वकीलों और अनेक छोटे बडे विषयों को चुना गया है। मध्ययुगीन भावना के बटलर सर्वश्रेष्ठ और अन्तिम व्यंग्यकार थे ।''[१२]पद्य साहित्य में बटलर के पश्चात ड्राईडन श्रेष्ठ व्यंग्यकार है । इनका रचनाकार काल व्यंग्य के लिए अनुकूल था।

आधुनिक व्यंग्य के जन्मदाता के रुप में ड्राईडन का अंग्रेजी साहित्य में सम्मान होता है । ड्राईडन के पश्चात अन्य, व्यंग्यकार पोप, एडवर्ड, यंग, जॉग गे, साम, जैनिन, मार्क एकनसाईड, सेमुअल जान्सन, चार्ल्स चर्चिल आदि है । गद्य साहित्य में उत्कृष्ट व्यंग्य का युग 'डिफाय' और 'स्विफ्ट' का युग है । डिफॉय की सर्वोत्कृष्ट व्यंग्य रचना 'द शॉटस्ट वे विद डिसैन्टर्स डिफॉय है ।' डिफॉय के समकालीन ही महान व्यंग्यकार स्विफ्ट हुए है । स्विफ्ट के समान सबल व्यंग्यकार सम्भवत: अंग्रेजी गद्य-साहित्य में कोई भी नहीं हुआ । 'गुलवीर्स ट्रॅवल्स' स्विफ्ट की सुप्रसिद्ध रचना है । स्विफ्ट के पश्चात अन्य व्यंग्यकार, आरबुथनट, जूनियस, हेनरी फील्डींग, मोर्ट सहल, शैली बर्मन आदि व्यंग्यकार अंग्रेजी साहित्य में मुख्य रुप से उल्लेखनीय है ।

२.४ हिंदी साहित्य में व्यंग्य परम्परा :

हिंदी की व्यंग्य परम्परा पर संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, आदि भारतीय व्यंग्य साहित्य का और पाश्चात्य व्यंग्य साहित्य का प्रभाव रहा है । हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक व्यंग्य कभी मन्थर गति से तो कभी तीव्र गति से पनपा है । आदिकाल (वीरगाथा) विदेशी आक्रमणों, गृहकलह, अराजकता, अस्थिरता, से घिरा हुआ था । देश में अधर्म, अनाचार, जातिवाद का बोलबाला था । यह विडम्बना ही रही कि, व्यंग्य सृजन के लिए इस काल की परिस्थिति अनुकूल होते हुए भी इस युग में सशक्त व्यंग्य साहित्य की रचना नहीं हो सकी । फिर भी इस काल में जितना व्यंग्य रचा गया है उसका रुप निन्द्य-भर्त्सना का ही रहा है । इस काल में पृथ्वीराज रासो, बीसलदेव रासो आदि व्यंग्य प्रधान रचनाएँ हैं ।

भक्तिकाल में कबीर बहुत सशक्त व्यंग्यकार हुऐ है । कबीर का व्यंग्य प्रहार करनेवाला सिद्ध हुआ है । तुलसी और सुर की रचनाओं में भी व्यंग्य

मिल जाता है । जायसी की रचनाओं में भी व्यंग्य के छींटे जरुर मिलते है । रीतिकाल में व्यंग्य घोर श्रृंगार के समक्ष पिछड़ गया है । इस युग में व्यंग्य की छटा जरुर मिलती है । बेनी कवि ने 'भडौवों' के रुप में निन्दापूर्ण आक्षेप किये है । बिहारी, रहीम तथा वृन्द आदि कवियों ने अपने काव्य में व्यंग्य का छिटपुट प्रयोग किया है ।

आधुनिक काल में भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद,प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और नयी कविता में और गद्य की सभी विधाओं में व्यंग्य दिन दुना रात चौगुना इस उक्ति से बढ़ा है एवं विकसित हुआ है । कालानुक्रम से हिन्दी व्यंग्य परम्परा का अध्ययन निम्नानुसार है -

२.४.१ वीरगाथा काल के साहित्य में व्यंग्य

२.४.२ भक्तिकाल के साहित्य में व्यंग्य

२.४.३ रीतिकाल के साहित्य में व्यंग्य

२.४.४ आधुनिक काल के साहित्य में व्यंग्य

२.४.१ वीरगाथा काल के साहित्य में व्यंग्य :

हिन्दी साहित्य के आदि काल या वीरगाथा काल में देश उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था । भारत पर चहूँ ओर से विदेशी आक्रमण हो रहे थे । देश में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष , फुट एँव वैमनस्य व्याप्त था । इस समय राष्ट्र घोर अशान्ति और कलह का अखाडा बना हुआ था, राजनीतिक दृष्टि से इस समय देश अजराकता एवं गृह कलह में फँसा हुआ था । राजनीतिक वातावरण के ठीक न होने का परिणाम धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक स्थितिपर हुआ है। इस काल में लिखे गये साहित्य में व्यंग्य मिलता है । बीसलदेव रासो में

बीसलदेव की पत्नी द्वारा पति पर किया गया व्यंग्य उल्लेखनीय है,

"देव सतावा राजा तुँ फिरई ।

घीव बीसही तु जीमो छई तेला ।"[१३]

अर्थात स्वामी, तुमने घी का व्यापार तो किया है किन्तु खाया तेल ही है याने मुझ जैसी सुन्दरी को पाकर भी तुम इधर-उधर भटकते रहे । इस प्रकार का व्यंग्य बीसलदेव रासो में है । तत्कालीन काल की स्त्री की अवस्था पर व्यंग्य करनेवाली मार्मिक पंक्तियाँ बीसलदेव रासों में मिलती है -

"अस्त्रीय जनम काई दिघऊ महेश ।"[१४]

इन पंक्तियों में व्यंग्य की छटा है ।

'कालिक रासो' में रचनाकार 'हीराणन्द' ने तत्कालीन मुगल शासक की भेदभावपरक अविवेकपूर्ण नीतियों के फल स्वरुप देश की दुर्दशा का व्यंग्यात्मक चित्रण किया है । उसके शासनकाल को कलियुग की संज्ञा देते हुए कवि ने कहा है,

"राखीस रुप हुआ भुपाल ।

अन्यावी नइ अति विकराल ।

न करइ लोक तणी सुरसार ।

लोक हुआ हित सवि निरधार ।

अहे महीयाली पाप हुआ घणाए,

कर पिडित लोक सुख समाधि

सुयणइ नहीं,ए घर हुआ श्योक ।"[१५]

उक्त पंक्तियों में कवि ने लिखा है की देश कि, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्थितियों में निरंतर ऱ्हास हो रहा है । अनेकानेक अन्याय करनेवाले भुपाल राक्षसों के समान हो गए है, प्रजा के हित की वे चिन्ता नहीं करते । लोक कर-पीड़ित है । उन्हें सुख सपने में भी उप्लब्ध नहीं होता । घर-घर दु:ख पल रहा है । इस प्रकार रचना में तत्कालीन समाज का सजग चित्र है । इसमें मुगल शासक की भेदभाव एवं अविवेक पूर्ण नीतियों पर व्यंग्य किया गया है ।

इस प्रकार 'स्त्री रासो' , 'पुरुष रासो' ,'मियाँ रासो', 'कलियुग रासो' , 'माँकण रासो' आदि सभी रचनाएँ परम्परागत है । इनका व्यंग्य उत्तम कोटी का नहीं है, लेकिन इनमें सीधे लोक-प्रवृत्तियों की अभिव्यंजना हुई है । इस प्रकार आदिकाल में व्यंग्य के छीटें मिलते है । ऊपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि हिन्दी के आदिकाल के सहित्य में व्यंग्य का बीजारोपण हुआ है ।

२.४.२ हिंदी के भक्तिकालीन साहित्य में व्यंग्य :

भक्ति काल की परिस्थितियों का अध्ययन करने से यह तथ्य सामने आता है कि, इस काल में इस्लाम का खूब प्रचार हो रहा था वही दूसरी और हिंदु समाज अपने धर्म को बचाने का हर संभव उपाय कर रहा था । आचार -विचार में किसी प्रकार की समानता नही थी और अपने धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ सिद्ध करने के प्रयास में दोनो के बीच खाई तो बढ़ती ही गयी, साथ ही आडम्बर को प्रश्रय मिला, धर्म के नियम कठोरत्तर हो गये । फलस्वप उँच-नीच का भेदभाव पनपने लगा । इस काल में भक्ति की धारा तेज गति से प्रवाहित हुई । भक्ति के साथ-साथ कबीर जैसे व्यक्ति ने कुप्रथाओं पर कडे प्रहार किये है ।

इस काल में कबीर को समाज-सुधारक के रुप में उँचा स्थान प्राप्त है । उन्होंने पूर्ण निर्भयता से हिंदु-मुस्लिम बाह्यचारों एवं ईश्वर, वेदों य पैगम्बरो

के नाम पर चलती हुई उँच-नीच की मान्यताओं की धज्जियाँ उड़ा दी थी । ब्राम्हण और पण्डित, मुल्ला और काजी उनके व्यंग्य के प्रहारों से तिलमिला उठे थे । उन्होंने पण्डितों के 'तीतर ज्ञान' पर आक्षेप उठाते हुए कहा है -

"पण्डित केश पोथियाँ, ज्यो तीतर का ज्ञान ।

औरन सगुन बतावही, आपन फन्द न जान ।"[१६]

उन्होंने एक साखी में गधे को ब्राम्हण से, कुत्ते को देवता से श्रेष्ठ कहा है । उनकी दृष्टि में मुर्गा मुल्ला से श्रेष्ठ है, क्योंकि वह सुप्त नगर को जगा तो देता है । कबीर की इस उक्ति में व्यंग्य उभरकर सामने आता है जैसे ,

"ब्राम्हण तें गद हा भला, आन देव ते कुत्ता ।

मुलन ते मुरगा भला, सहर जगावै सुत्ता ।"[१७]

इस प्रकार इसमे पण्डितों से गदहा अच्छा है, जो काम करता है और ईश्वर से कुत्ता जो समाज की रक्षा करता है मुल्ला से मुर्गा अच्छा है क्योंकि, वह सुप्त शहर को जगाने का कार्य करता है । इस प्रकार मुल्ला और पण्डितों पर तीखा व्यंग्य किया गया है । मुसलमानों की उपासना पद्धति पर भी कबीर की व्यंग्योक्ति नजर आती है-

"काँकर पाथर जोरि कै, मसजिद लई चुनाय

ता चढि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय ।"[१८]

धर्म के नाम पर,सभ्यता और संस्कृति के नामपर, सुरुचि सम्पन्नता और शिष्टाचार के नाम पर, समाज का 'उच्च वर्ग' जिस महानता का ढिढोंरा पिटता है । जिस बढप्पन का ढोल बजाता है, उसी पर कबीर अपनी लेखनी से तीव्र प्रहार करते है । इस संदर्भ में उन्होंने न हिंदुओ को छोड़ा है और न

मुसलमानों को । कबीर के काव्य में व्यंग्य इस रुप में मिलता है ।

भक्ति काल के अन्य कवि सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में सगूण भक्ति की श्रेष्ठता सिद्ध करने हेतु निर्गुण भक्ति पर अप्रत्यक्ष व्यंग्य किया है । सूरदास की गोपियों ने जहाँ उद्धव की ज्ञान गरिमा की खिल्ली उड़ाई जहाँ वचन-वैदग्ध्य द्वारा सुक्ष्म आघात किया है । उद्धव की चाल समझकर गोपियाँ खीझ के साथ व्यंग्य करती है , उसे ब्रज को जाने के लिए कहती है ,वहाँ व्यंग्य और कटु हो जाता है ,

"काहे को गोपीनाथ कहावत

जौ मधुकर वे साम्य हमारे क्यो न इहाँ ले आवत,

सपने की पहचान मानि जिए हमीह कलंक लगावत ।"[१९]

सूरदास का व्यंग्य प्रेम रस में पगा होने के कारण कटु न होकर मृदू और भावनात्मक है । यह एक अनुपम आनन्दी भाव उत्पन्न करता है, जिसमें सहानुभूति और करुणा के साथ मानसिक तादात्म्य की उत्पति होती है । सूरदास के साथ-साथ अष्टछाप कवि नन्ददास परमानन्ददास,कुन्भनदास आदि कवियों के ग्रंथों में व्यंग्य दिखाई देता है ।

भक्तिकाल मे रामभक्ति शाखा के कवि 'गोस्वामी तुलसीदास' के 'रामचरित मानस' में व्यंग्य की लपेट में उत्तम विनोद और विनोद की लपेट में उत्तम व्यंग्य देने की कला दृष्टिगत होती है । उनकी राचनाओं में शाब्दिक हास्य, उपहास तथा यत्र-तत्र परिहास के भी आकर्षक उदाहरण मिलते है । एक ऐसी उक्ति का प्रयोग महाकवि तुलसीदासजी ने किया है,

"रीझिहीं राज कुँअरि छबि देखी ।

इन्हहिं बरिही रि जान बिसेखी ।"[२०]

रुद्र के गण-हरि शब्द का प्रयोग 'बन्दर' के अर्थ में करते है परन्तु नारद उसे 'विष्णु'के अर्थ में लेते है । इस प्रकार रामचरित्मानस में बालकाण्ड में व्यंग्य किया हुआ है। 'जियारत'से अन्धे को आँखे बाँझ को पुत्र तथा कोढ़ी को स्वस्थ किये जाने का उल्लेख मिलता है, लोंगो की इस अन्धविश्वास की धारणा पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते है -

"लही आँख कब आँधरेही,बाँझ पुत कबपाय

कब कोढ़ी काया लही, जग बहरायच जाय ।"[२१]

प्रेमाश्रयी शाखा का प्रतिनिधित्व जायसी करते है । उनके पद्मावत में व्यंग्य की अच्छी योजना हुई है । पद्मावत महाकाव्य में जायसी लिखते है कि, रत्नसेन के प्रणय निवेदन पर पद्मावती कहती है कि हे जोंगी ! तेरी चेली या पत्नी तुझसे अलग होती है क्योंकि तेरे तन से नीरस की दुर्गन्ध आती है, तेरी भस्मी को देखकर मुझमें अस्पृश्यता जाग्रत होती है , जैसे -

"ओहट होहि जोगि तेरी चेरी ।

आवै बास कुरकुटा केरी ।।

देखि भभूति छूति मेहिं लागा ।

काँपे चांद राहू छूती सौं भागा ।।"[२२]

पद्मावती आगे कहती है कि , जोगी और भोगी में भला कैसी जान -पहचान ? सभी जोगी ऐसा कपट खेलते हैं । इस प्रकार निन्दात्मक व्यंग्य पद्मावत में दृष्टिगोचर होता है ।

भक्ति काल के स्वर्णिम युग में व्यंग्य की रचनाएँ होते हुए भी विद्वान लोग इसे नकारते रहे है । लेकिन इसी युग में व्यंग्य का सशक्त सूत्रपात

होकर व्यक्ति गत प्रहार किये गये है । भक्ति काल के अन्य प्रमुख कवियों में भी व्यंग्य की साधना मुख्य रुप से दिखाई देती है ।

२.४.३ हिंदी के रीतिकाल के सहित्य में व्यंग्य :

रीतिकाल में भारतवर्ष पर मुगल साम्राज्य का प्रभुत्व स्थापित हो चुका था । जनता का जीवन अपेक्षाकृत शान्त एवं स्थिर हो चुका था । अकबर ने अपनी उदार नीति द्वारा हिंदु-मुस्लमानों के बीच सांस्कृतिक समन्वय की स्थापना की थी । जहाँगीर का कामकाज शान्ति एवं विलासिता के वातावरण में चलता रहा । शहाजहाँने प्रदर्शन की भावना को आश्रय दिया तो औरंगजेब के काल में स्वार्थ,रक्तपात तथा कट्टर साम्प्रदायिकता का जोर बढ़ता गया ।

इसकाल में देश के हिंदु नरेश तथा जनता त्रस्त हो गयी थी । देश का वातााावरण पुन: अस्थिर अशान्त हो गया था । मुगल साम्राज्य के पश्चात राष्ट्र में अनेक छोटे-छोटे सामन्ती राज्य स्थापित हो गये थे । इस काल में दासी प्रथा, बालविवाह प्रथा, विधवा विवाह का विरोध जैसी कुप्रथाएँ प्रचलित थी । यह काल अर्थात पतन का और पराकाष्ठा का काल था ।

इस समय की परिस्थितियों के अनुसार साहित्य ने नया मोड़ लिया था । साहित्य हृदय पक्ष की अनुभूति न रहकर कला पक्ष की अभिव्यक्ति बन गया था । रीतिकालीन साहित्य शृंगार रस प्रधान होते हुए भी इस काल में वीररस पूर्ण, भक्ति रस पूर्ण, वैराग्य सम्बन्धी रचनायें मिलती है । कहीं-कहीं व्यंग्य की झलक भी मिल जाती है। रीतिकाल के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त प्रतिनिधि कवि बिहारी है । बिहारी के काव्य में सौंदर्य और प्रेम - क्रीड़ा की झाँकी प्रस्तुत की गयी है । कवि ने अयोग्य व्यक्तियों के सम्बन्ध में कई व्यंग्यात्मक दोहे लिखे है । ये दोहे मुख्यत: अन्योक्ति रूप में है । बिहारी ने अपने आश्रयदाता

पर भी कटाक्ष किए हैं । राजा जयसिंह के विलासी जीवन पर बिहारी ने व्यंग्य किया है । भ्रमर को लक्ष्य कर कवि कहता है -

"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल ।

अलि कलि ही सों बँध्यों, आगे कौन हवाल ।"[२३]

बिहारी का यह सर्व प्रसिद्ध दोहा है । इस दोहे में राजा जयसिंग की विलासी प्रवृत्ति पर व्यंग्यात्मक कटाक्ष किया है, एवं इस दोहे में राजा जयसिंह को सचेत किया गया है ।

बिहारी ने सतसई में क्षुद्र महत्वाकांक्षी हीन व्यक्तियों पर भी प्रहार किया है,

"जपमाला छापा, तिलक सैर न एकौ काम ।

मन काँचे नाचे वृथा, साँचे राँचे राम ।"[२४]

यहाँ बिहारी कपट, आडम्बर,प्रदर्शन का विरोध करते हुए कहना चाहते हैं कि, धर्म के विषय में जो आडम्बर करते है वें ईश्वर की सच्ची भक्ति के अधिकारी नहीं हो सकते । इस प्रकार सतसई में सरस व्यंग्य, विनोदोक्तियाँ लिखी है ।

बिहारी के पश्चात रीतिकाल में जीवन की यथार्थता का सच्चा तथा सारगर्भित चित्र प्रस्तुत करने के कारण रहीम की रचनाएँ प्रसिद्ध है । रहीम का मनोवैज्ञानिक अध्ययन मूर्तिमान है । सामाजिक विद्रुपताओं पर उन्होंने जमकर प्रहार किया है । उन्होंने ईश्वर पर भी व्यंग्य किया है ।-

" परि रहिबो, मरिबो भलो, साहिबो कठिन कलेश ।

बावन हुइ, बलि काँ छल्यो, भल दीन्हेड उपदेश ।"[२५]

धर्म के लिए अपना शरीर न पा देना, मर जाना और कठिन क्लेश सह लेना अच्छा है । ऐसा प्रभु का उपदेश है । परन्तु रहीम प्रभु से कहते है - पर क्षमा कीजिएगा प्रभो ! धर्म पर सब कुछ अपर्ण करने वाले राजा बलि को आपने वामन रूप धारण करके छला ! प्रभो., अपने आचरण द्वारा यह कौनसा अच्छा उपदेश दिया ? भगवान पर ही रहीम ने यहाँ व्यंग्य किया है ।

रीतिकाल में घनानन्द प्रेम कवि के रूप में प्रसिद्ध है । प्रेम दशा की व्यंजना ही इनका अपना क्षेत्र है । प्रेम की गूढ अन्तदर्शा का उद्‌घाटन जैसा इनमें है, वैसा हिन्दी के अन्य श्रृंगारी कवि में नहीं है। इनकी रचनाओं में संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों का सरस समावेश है । किन्तु वियोग वर्णन में ये अपेक्षाकृत अधिक सफल सिद्ध हुए है । उनका वाग्वैदग्ध्य है -

"घन आनँद प्यारे सुजान सुनौ,

इत एक ते दूसरो आँक नहीं ।

तुम कौन धौ पाटी पढें हो लाल,

मन लेहू पै देहू छटाँक नहीं ।"[२६]

इस में मन के दो अर्थ है - चालीस सेर का मन और हृदय । छटाक एक सेर का सोलहवाँ भाग होता है । दूसरे अर्थ में उल्टा करके कटाक्ष । इस प्रकार घनानन्द ने व्यंग्य किया है।

कवि वृन्द के नीति दोहों में समाज के अनैतिक व्यवहार का पर्दाफाश किया है। जो अन्याय, अत्याचार, अनीतिपूर्ण काम करते है । ऐसे दुराचारियों पर प्रहार करते हुऐ वृन्द ने लिखा है,

"हित हू की कहिये न तेहि, जो नर होय अबोध ।

ज्यो नकहे को अरसी, होत दिखाये क्रोध ।"[२७]

इन पक्तियों में वृंद ने दुराचारियों पर सरस व्यंग्य कसा है ।

इस प्रकार रसखान के साहित्य में भी व्यंग्य का प्रयोग किया गया है । संक्षेप में रीतिकाल में वक्रोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति आदि के अलग-अलग रूपों में व्यंग्य किया हुआ मिलता है । उपरोक्त विवेचन से इतना स्पष्ट होता है कि, भारतेन्दु युग के पहले भी हिंदी साहित्य में व्यंग्य की परंपरा मिलती है ।

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि, हिंदी साहित्य के वीरगाथा काल में व्यंग की झलक केवल कायरता, कामुकता तथा भीरूता की भर्त्सना एवं निंदा के रूप में मिलती है । भक्ति साहित्य में व्यंग्य का सशक्त सूत्रपात होकर कवियों ने व्यक्तिगत प्रहार किये । इस काल में कबीर को समाजसुधारक के रूप में उँचा स्थान प्राप्त है, उन्होंने धार्मिक मान्यताओं की धज्जियाँ उडा दी है । तथा रीतिकल में भी व्यंग की झलक आवश्यक मिल जाती है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि, आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के साहित्य में व्यंग्य उभरकर आया है ।

२.४.४ हिंदी के आधुनिक काल के साहित्य में व्यंग्य :

हिंदी साहित्य का आधुनिक काल एक विशेष परिवेश के साथ साहित्य जगत में प्रवेश करता है । इससे पूर्व का अधिकांश हिंदी साहित्य मूलत: पद्य में था । आधुनिक काल में पद्य के साथ-साथ गद्य का अभूतपूर्व विकास हुआ है । उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, आत्मकथा, संस्मरण, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, यात्रावर्णन, लघुकथा आदि समस्त गद्य विधाओं का उद्‌भव और विकास इसी युग में हुआ है । आधुनिक कालीन साहित्य में महान क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है । आधुनिक काल साहित्य पीड़ित, शोषित, जीवन की यथार्थता

का साहित्य है । आधुनिक साहित्य में जीवन-का व्यापक चित्रण है, इस कारण वह जीवन के अधिक निकट आ गयाा है । आधुनिक काल के साहित्य की व्यंग्य परम्परा को निम्न रूप में देखा जा सकता है -

२.४.४.१ आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य

२.४.४.२ आधुनिक हिंदी उपन्यास में व्यंग्य

२.४.४.३ आधुनिक हिंदी कहानी में व्यंग्य

२.४.४.४ आधुनिक हिंदी नाटक में व्यंग्य

२.४.४.५ आधुनिक हिंदी एकांकी में व्यंग्य

२.४.४.६ आधुनिक काल की अन्य विधाओं में व्यंग्य

२.४.४.७ आधुनिक हिंदी निबंध में व्यंग्य

२.४.४.१ आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य :

आधुनिक काल के हिंदी साहित्य में विशेषत: खड़ी बोली में तो व्यंग्य की बाढ़ सी आ गयी है । आमतौर पर हर कवि की रचना में व्यंग्य मिलता है, आज तो हालत ऐसी है कि, बिना व्यंग्य कविता को पाठक, श्रोता पढ़ने तथा सुनने के लिए तैयार नहीं हैं ।

आधुनिक काल में भारतेन्दु, द्विवेदी युग में आयोध्यासिंह उपाध्यय 'हरिऔध', मैथलीशरण गुप्त, छायावाद में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला,' महादेवी वर्मा,रामधारीसिंह 'दिनकर' प्रगतिवाद में नागार्जुन, प्रयोगवाद में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, साठोत्तर काल के व्यंग्य कवियों धूमिल, प्रभाकर माचवे, दिनकर सोनवलकर, मधुर पांडेय,बरसानेलाल चतुर्वेदी आदि व्यंग्य कवि की कविता में विकृति, प्रदर्शन, अन्याय, अत्याचार के संदर्भ में व्यंग्य किया गया है ।

भारतेन्दु हरिशचंद्र आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह है । उन्होंने भाषा को एक चलता हुआ रूप देने की कोशीश की है । आधुनिक नूतन विचार और भाव आपकी कविताओं में पाए जाते हैं । आपने भक्ति-प्रधान, शृंगार प्रधान, देश-प्रेम- प्रधान, तथा सामाजिक समस्या प्रधान कविताएँ की है । भारतेन्दु ने व्यंग्य साधन अपनाते हुए प्रतीकों, वैदग्ध्य एंव विडम्बनाद्वारा यथार्थ और आदर्श के छद्मवेश को उघाडा है । भारतेन्दु कहते हैं -

"अंग्रेज राज सुख साज, सजे सब भारी ।

पै धन विदेश चलि जात, इहै अति ख्वारी ।"[२८]

इसमें राष्ट्र प्रेम का उभरा हुआ रुप है । इसमें अंग्रेजो के समय की सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति पर व्यंग्य किया गया है ।

द्विवेदी युग के कवि प. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने एकता का नारा देनेवालों की थोथी प्रवृत्ति पर तथा बाहर कुछ अंदर कुछ के फर्क, भेद, सामाजिक उँच-नीच भेद को लेकर ऊँची जाति के लोगों के नीच व्यवहार पर व्यंग्य प्रहार किया है -

"आज दिन तो अनेक ऊँचों की

रोटियाँ नाम बेच है सिकती

क्या कहे बात बेहयाई की

है खुले आम बेटियाँ बिकती ।"[२९]

इन पंक्तियों में ऊँच-नीच भेद को लेकर ऊँचे बेइयाई लोगों के काले कारनामों पर तीखा व्यंग्य किया है । द्विवेदी युग में हरीऔध के पश्चात मैथिलीशरण गुप्त का नाम प्रमुख रुप से सामने आता है । गुप्तजी के काव्य में

सामाजिक पारिवारिक परम्परा को लेकर 'द्वापर' में व्यंग्य प्राप्त होता है । स्त्री-पुरुष लिंग भेद के आधार पर रिश्तों पर चल रही प्रथा को लेकर औरत की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कवि कहते है -

"हाय ! वधु ने क्या वर-विधायक एक वासना पाई ?

नहीं और क्या उसका पिता, पुत्र या भाई ?

नर के बाँटे क्या नारी की नग्न मूर्ति ही आई ?

माँ बेटी या बहन हाय ! क्या संग नहीं वह लाई ?"[३०]

इस प्रकार द्विवेदी युगीन काव्य में सुधार और उपदेश की भावना के साथ-साथ व्यंग्य मिलता है ।

छायावाद युग काव्य प्रधान युग रहा है । छायावादी युग ने यथार्थ से मुख मोड़कर पलायन, रोमांस प्रकृति-प्रेम तथा प्रतिकों में स्वयं को खो दिया है । लोक संवेदना की भावना के अभाव में छायावादी कवि व्यंग्यकार नहीं हो सके । जहाँ कहीं भी छायावाद कविता में व्यंग्य है, वहाँ भी उसमें रोमाटिंक गाम्भीर्य ही अधिक है । छायावादी के समानान्तर कवि दिनकर हुए है । कवि दिनकर ने अनेक विषयों पर व्यंग्य किया है । मानव जाति की स्वार्थ, नीच, बौने, भगोडी प्रवृत्ति पर करारा व्यंग्य किया है । लोकतंत्र, बेपारियों की प्रवृत्ति, पुलिस प्रशासन, संसदीय प्रणाली, मंत्रिपरिषद, भाषण बाजी, आश्वासनों की बरसात, कथनी और करनी के भेद के संदर्भ में कवि व्यंग्यात्मक प्रहार करते हुऐ लिखते है,

"जहाँ भी सुनो यही आवाज है,

भारत में आज बस, जीभ का स्वराज्य है,

और मंत्री भी न अप्रमुख है,

एक कैबिनेट के यहाँ अनेक मुख है ।''[३१]

दिनकरजीने संसदीय प्रणाली की उक्त पंक्तियों में बखिया उधेडी है। मंत्रियों पर तीखा आघात किया है, मंत्री अनेक मार्ग से भ्रष्टाचार करते है । इस प्रकार शायद ही कोई विषय हो, जिस पर दिनकर ने प्रहार न किया हो ।

छायावाद के प्रमुख कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जो हिंदी साहित्य के महाप्राण कहलायें जाते है, निराला ने छायावाद के साथ-साथ प्रगतिवादी कविताएँ लिखी है । इनकी कविताओं में भी व्यंग्य के स्वर दिखाई देते है । निरालाजीने पूँजीपतियों का, गरीबों की पीड़ा का, अमीरों के नखरों का, धार्मिक खोखली प्रवृत्ति का रहस्योद्‌घाटन किया है । निराला की कविता में आजादी के लिए । आक्रोश है, फिर भी इनके काव्य में व्यंग्य की छटा मिलती है ।

''अबे, सुन बे गुलाब

भूल मत जो पायी खुशबू, रंगोआब,

खून चुसा खाद का तुने अशिष्ट

डाल पर इतराना है केपीटलिस्ट ।''[३२]

निरालाजी ने अन्योक्ति शैली में पूँजीपतियों एवं साम्यवादियों पर कटाक्ष रुप में व्यंग्य किया है । निराला की 'भिक्षुक', 'दान', 'गर्म पकौडी' और 'तोड़ती पत्थर' कविताओं में व्यंग्य प्रधान है । नागार्जुन की व्यंग्य रचना में कबीर की तल्खी, भारतेन्दु की करुणा और निराला की विनोद वक्रता का अद्‌भूत सामंजस्य है । गरीबी, भूखमरी के चित्रण में नागार्जुन को कोई सानी नहीं रखता, आक्रोश गरीबी की दाहकता इतनी है कि, 'खाली नहीं और खाली' कविता में नागार्जुन खाली पेट की दाहकता पर प्रहार किया है -

"न मकान, न मेज, न अस्पताल, न चेअर,

न सीट खाली नहीं है ।

खाली है हाथ, खाली है पेट, खाली है थाली ।"[३३]

इस में गरिबी की दाहकता को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, गरिबों को न मकान होता है ना मेज, ना बिमारी का इलाज करने के लिए अस्पताल इनके लिए कोई भी जगह खाली नहीं है । खाली है हाथ, काम नहीं है इसलिए पेट खाली है और थाली भी खाली है । ऐसा दाहक एवं व्यंग्यात्मक वर्णन आक्रोश कविता में है ।

नागार्जून ने अपनी रचनाओं में सर्वहरा वर्ग का प्रतिनिधित्व किया है । वे साहित्यकारों में निराला से अत्याधिक प्रभावित थे इसी कारण निम्नवर्ग में जागृति लाने के लिए सीधे उनसे कुछ प्रश्न करते है, जैसे -

"रहोंगे तुम क्या सदा गुलाम

हमेशा रहेंगे पशु की भाँति

अरे, कब तक तुमको ये लोग ?

हाय, पाकर भी मानव देह

तुम्हारा यों बद्तर है हाल ।

तनिक भी चीं-चूँ किया भी कि नहीं

खींच लेते है जिंदा खाल ।"[३४]

उनकी इस 'बातचित' में पीड़ित के प्रति संवेदना है और उच्चवर्ग के प्रति व्यंग्य की फटकार है । इस तरह युग-वैषम्य डटकर तथा अभावग्रस्त

जीवन का उन्होंने स्वयं डटकर सामना किया तथा औरों को भी इसके लिए प्रेरित किया । डॉ. शेरजंग गर्ग के मतानुसार, "प्रगतिवादी कवियों में जितना अधिक व्यंग्य नागार्जुन ने किया है, उतना शायद अन्य कोई कवि नहीं लिख पायें, निराला भी उतनी मात्रा में श्रेष्ठ व्यंग्य नही लिख पाये ।"[३५]

नागार्जुन के पश्चात प्रयोगवादी साहित्यकारों में सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की अपनी अलग पहचान है । कवि ने मानवीय सौदंर्य बोध पर और युग जीवन पर अत्याधिक व्यंग्य किया है । सर्वेश्वरजी 'व्यंग्य मत बोलो' में ऐसे लोगों पर प्रहार कर हितोपेदेश की वाणी में कहते हैं, जैसे -

"व्यंग्य मत बोलो

कहता है जूता तो क्या हुआ

पैर में न सही

सिर पर रख डोलो

भीतर कौन देखता

बाहर निहारो चिकने ।"[३६]

डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के बारे में कहते है, "व्यंग्य के माध्यम से कविता इतनी प्रभावपूर्ण बन सकती है, यह सर्वेश्वर की कविताओं से जाना जा सकता है ।"[३७] इस प्रकार सक्सेनाजी की व्यंग्य रचनाएँ है ।

साठोत्तरी काल के हिंदी साहित्य में प्रखर व्यंग्य कवि के रुप में धूमिल सुपरिचित है । धूमिल ने वर्तमान भारत के मनुष्य का परिवेश, व्यभिचार, चरित्रहीनता, बेईमानी, उदासिनता एवं झुठे नारों के परिवेश को लक्ष्य बनाकर तीखें व्यंग्य किये हैं । धूमिल ने आत्मव्यंग्य के द्वारा जीवन के कई क्षेत्रों में

असंगति, विद्रोह, अत्याचार, बेरोजगारी, नेता, अपराधी, वकील- दार्शनिक आदि पर स्पष्ट शब्दों में व्यंग्य किया है । 'संसद से सड़क तक' में राजनेता पर व्यंग्य इस प्रकार किया है -

"हाँ यह सही है कि कुर्सियाँ वही है,

सिर्फ टोपियाँ बदल गई है ।"[३८]

उक्त पंक्तियों में राजनेता की पोल खोलते हुए कहते है कि, देश स्वतंत्र हो गया पर राज करने वाले श्वेत अंग्रेज गये और काले अंग्रेज उसी कुर्सियों बैठे इस कारण देश की स्थिति जैसी की वैसी (जस की तस) बनी हुई है।

धूमिल की कविता पाठक को रिझती नहीं वह तो उद्धिग्नता, खीझ, आत्म ग्लानि, उत्पन्न कराती है । इन के व्यंग्य काव्य में युग की सच्चाई व्यक्त हुई है । इसी कारण अशोक वाजपेयी, धुमिल को विचार का कवि कहते हुए लिखते है, "धूमिल की कविता केवल भावात्मक स्तर पर नहीं बल्कि बौद्धिक स्तर पर भी सक्रिय होती है ।"[३९]

धूमिल अपनी कविता 'मोचीराम' में व्यंग्य करते हुऐ लिखते है,

"बाबुजी ! सच कहूँ- मेरी निगाह में

न कोई छोटा है

न कोई बड़ा है

मेरे लिए, हर आदमी एक जोड़ी जूता है

जो मेरे सामने

मरम्मत के लिए खड़ा है ।"[४०]

इस पंक्तियों में धूमिल पाठक को सोचने पर बाध्य करते है । इसमें भावात्मक स्तर तो है बल्कि बौद्धिक स्तर भी सक्रिय दिखाई देता है ।

दिनकर सोनवलकर ने देश के नेताओं की दलबदलू प्रवृत्ति पर इस प्रकार व्यंग्य किया है -

"क्यों जी गिरगिट,

तुम क्या कर रहे हो ?

केन्द्र के मूताबिक

रंग बदल रहाँ हूँ ।"[४१]

उक्त पंक्तियों में राजनेता की दलबदलू प्रवृत्ति को गिरगिट कहा है, जो परिस्थिति के अनुसार रंग बदलता है । वही अपने देश के नेता जिसकी केन्द्र में सत्ता आती है, उसी दल के साथ तालमेल बना लेते है । इस प्रकार दलबदलु प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है ।

मधुर पांडेयजी 'नेता' पर व्यंग्य करते है । एक 'नेता' वन महोत्सव में एक पौधा लगाते है, पर बकरी उसे खा जाती है । नेता बकरी पर खुश है और वे रात में उसे 'डिनर' में खा जाते है । जब इसे लेकर हंगामा हो गया तो नेताजी का वक्तव्य देखिये -

"अजीब है लोग -

जो जरा - सी

बकरी के लिए

इतना चिल्ल-पों

मचा रहें है ।

हम तो धीरे-धीरे

पूरे देश को ही

खाने का प्रोग्राम

बना रहे है ।''[४२]

राजनीति को फटकारते हुए बरसाने लाल चतुर्वेदी जी ने आज की राजनीति को अलग ढंग से परिभाषित किया है, 'रस परिवर्तन' कविता में इस का परिचय दिया है -

''थूक कर चाटना

साहित्य में बीभत्स माना जाता है ।

राजनीति में, अब उसे श्रृंगार रस मान लिया गया है ।''[४३]

उपरोक्त कवियों के अलावा आधुनिक हिंदी व्यंग्य कवियों में श्री. केशवचंद्र वर्मा, भारतभूषण अग्रवाल, डॉ. विनोद गोदरे, श्रीकांत चौधरी, सुरेश उपाध्याय, प्रदीप चौबे, डॉ. सरोजनी प्रीतम, बटुक चतुर्वेदी, रामनिवास शर्मा आदि कवियों के नाम उल्लेखनीय हैं । स्वाधीनता के बाद उभरती-फैलती जा रही विसंगतियों ने हिंदी कवियों को व्यंग्य की ओर व्यापकता के साथ जोड़ा है । आज स्थिति ऐसी है कि प्राय: समस्त समकालीन कवियों की रचनाओं में व्यंग्य को सहज ही पाया जा सकता है ।

निष्कर्ष रुप में उक्त व्यंग्य कविताओं को देखकर एक बात निश्चित रुप से स्पष्ट होती है कि, पुरानी मान्यताओं से आगे निकलकर नये प्रयोग हुए है।

शिल्प की दृष्टि से नये क्षितीज को स्पर्श किया है, भाषा में निखार आ गया है। व्यंग्य काव्य की प्रभावोत्पादकता में भी वृद्धि हुई है । कविताओं में वैविध्य आ गया है, साथ ही परिवेश के दोषों पर गहरी चोट करने की क्षमता भी है । व्यंग्य कविता के उद्देश्य से बिल्कुल साफ दिखायी देता है कि हास्य को उसमें मिला देने से कविता के आघात तीखे लगते हैं ।

२.४.२ आधुनिक हिंदी उपन्यास में व्यंग्य :

आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों में सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार प्रेमचंदजी है। प्रेमचंदजी के 'गोदान', 'गबन', 'सेवासदन', 'प्रेमाश्रम', 'प्रतिज्ञा', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि' आदि उपन्यास में व्यंग्य मिलता हैं । प्रेमचंद के पश्चात व्यंग्य उपन्यासकारों में प्रमुख स्थान जी.पी. श्रीवास्तव का है । श्रीवास्तव के 'भड़ामसिंह शर्मा' और 'लतखोरीलाल' उपन्यास प्रकाश में आये हैं । इन उपन्यासों में समाज के हास्यस्पद चरित्रो की खोज खबर है । डॉ. रांगेय राघव का उपन्यास 'हुजूर' इस कोटि का उपन्यास है । डॉ. रांगेय राघव के पश्चात विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त का 'चांदी का जूता', 'राधाकृष्ण का 'सनसनात सपने', केशवचंद्र वर्मा का 'काठ का उल्लू', पाण्डेय बेचन शर्मा का 'कढ़ी में कोयला' आदि प्रमुख व्यंग्य उपन्यास है। साठोत्तरी हिंदी की साहित्यिक कृतियों में हरिशंकर परसाई का व्यंग्य उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी' के प्रकाशन के साथ हिंदी गद्य-व्यंग्य की यात्रा को एक नयी दृष्टि मिली है । परसाई जी के पश्चात केशवचंद्र वर्मा का 'आँसू की मशीन', नागार्जुन का 'हीरक जंयती', श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी', फणाश्वरनाथ रेणु का 'मेरी गंज गाँव', बदीउज्जमा का 'एक चुहे की मौत', नरेन्द्र कोहली का 'आश्रितों का विद्रोह', डॉ. शंकर पुणतांबेकरजी का 'एक मंत्री स्वर्ग लोक में', डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी का 'मंत्रीजी के निजी सचिव', डॉ. सुदर्शन मजीठिया का 'कागजी सुल्तान' और डॉ. सरोजनी प्रीतम 'बिके हुए लोग' आदि उपन्यास

मुख्य रुपसे व्यंग्य उपन्यास है । जो व्यंग्य उपन्यास की परम्परा को आगे बढ़ाते हैं । उक्त उपन्यासों में प्रयुक्त व्यंग्य इस प्रकार दृष्टिगत होता है ।

प्रेमचंद कालीन समाज में शिक्षा का दुरुपयोग, धार्मिक पाखण्ड, कुरीतियाँ, अंग्रेज शासकों द्वारा निरीह जनता पर होने वाले अत्याचार, सुसंपन्न वर्ग के द्वारा विपन्न वर्ग का शोषण, भ्रम में फँसाकर रखने की प्रवृत्ति, भ्रष्टाचार, अन्याय आदि हर कहीं फैला था । प्रेमचंदजी के उपन्यास गोदान, गबन, सेवासदन, प्रतिज्ञा, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि में व्यंग्य अनेक जगह मिलता है । गोदान उपन्यास में स्थान-स्थान पर व्यंग्य के रोचक उदाहरण मिलते हैं । "ठाकुर से किसान दस रुपये कर्ज चाहता है और ठाकुर दस रुपये का दस्ताऐवज लिखाकर पाँच रुपये देता है । बाकी पाँच नजराने और तहसीर, दस्तुरी और ब्याज के काट लेता है, तब किसान का उत्तर देखिये "हाँ, सरकार ? अब पाँचो यह भी मेरी ओर से रख लिजीए ।" "कैसा पागल है ।" "नहीं सरकार एक रुपया छोटी ठकुराईन का नजराना है, एक रुपया बड़ी ठकुराईन का एक रुपया छोटी ठकुराईन के पान खाने का, बाकी बचा एक रुपया वह आपके क्रिया करम के लिए ।"[४४] इस प्रकार व्यंग्य उक्तियाँ है जिसमें उनकी कृतियाँ सजीव तथा रोचक बनती हैं । तत्कालीन जमिंदारी प्रथापर किया गया यह व्यंग्य करारी चोट करनेवाला है ।

इस परम्परा में जी.पी. श्रीवास्तव के सात उपन्यास में समाज के हास्यास्पद चरित्रो की खोज खबर है । इनके उपन्यास हास्यप्रधान है, इनके उपन्यासों में वैचारिक चिंतन नहीं किया गया है । इसके पात्र कल्पित है । इसके आधार पर प्रस्तुतिकरण सस्ती गुदगुदी पैदा कर देता है । इन उपन्यासों में समाज के हास्यास्पद चरित्र को लेकर खिल्ली उड़ाई गयी है । जिसका मूल उद्देश्य व्यंग्य करना है । इन उपन्यासों में प्रमुख व्यंग्य प्रधान उपन्यास 'लतखोरी लाल' एवं 'भड़ामसिंह शर्मा' उल्लेखनीय है । लतखोरीलाल उपन्यास में किया गया व्यंग्य -

ऐठूंमल : "कहो बेटा, फूल सड रहे है ?"

बाबाने भी पिनापना कर कहा है :"और तुम कहो भतीजे, क्या अपनी अम्मा का दूध पी रहे हो ?"

गोदवाली : "अबे तु क्या तरस रहा है तेरी भी अम्मा पास ही है ? मार मुँह देखता क्या है ? बुढ़ापे में फिर एक दफे जवानी आवेगी ।"

मुन्नी : "क्या कहा तुने हरामजादी ?"[४५]

स्पष्ट है कि जी.पी.श्रीवास्तव के हास्य व्यंग्य में अश्लीलता प्रचुर मात्रा में मिलती है, जिसे हम भौंडा या निम्नस्तरीय कह सकते है ।

इस परम्परा में डॉ. रांगेय राघव का उपन्यास 'हुजूर' एक श्रेष्ठ उपन्यास है, जिसमें उपन्यासों की प्रचलित परम्परा से थोड़ा हटकर ब्रिटीश कालीन भारत की विलासिता, चाटुकरिता और फरेब को अनावृत्त किया गया है। इस परम्परा में विध्यांचल प्रसाद गुप्त का 'चाँदी का जूता' नामक उपन्यास प्रकाशित हुआ जो हास्यवेष्ठित व्यंग्य प्रस्तुत करता है । जो गांधीजी के सपने के रामराज्य की बेईमानी, भ्रष्टाचार को सटीक प्रस्तुत करता है ।

इस परम्परा में केशवचंद्र वर्मा की लेखनी असंगतियों पर चोट करती जा रही थी । उस समय देश की जनता व्यवस्था तंत्र पर पूरी तरह से निर्भर हो चुकी थी । शासन व्यवस्था केवल वेतन पानेवालों के बल पर चलने लगी थी । इसके फलस्वरूप प्रशासन में भ्रष्टाचार, लालफीतशाही, भाई-भतीजावाद फैलने लगा था । इमानदार, कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों की घुसखोरी प्रवृत्ति पर करारी चोटे वर्माजीने की है । वर्माजी का उपन्यास 'काठ का उल्लू और कबुतर' में व्यंग्य के उत्तम नमुने दृष्टिगोचर होते हैं ।

साठोत्तरी हिंदी उपन्यास की परम्परा में हरिशंकर परसाई का व्यंग्य उपन्यास 'रानी नागफनी' की कहानी का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । इस उपन्यास में समाज शिक्षा प्रशासन और राजनीति में व्याप्त अन्तर्विरोधी की गइराई से पड़ताल कर उन्हें अनावृत्त किया है ।

'रानी नागफनी की कहानी' में उन्होंने राजनेता पर व्यंग्य करते हुए लिखा है । मरते दम तक अपने पद पर असीन रहना, अपना अधिकार बनाये रखना राजनीतिक क्षेत्र की मुख्य विशेषता है । ऐसे -ऐसे नेतागण देखने को मिलते हैं, जो मुर्दो की तरह निष्क्रिय है, फिर भी पदलिप्सा नहीं त्यागते और पद पर बने हुए है । इस और संकेत करते हुए परसाईजी लिखते है - "गोवरधन वृद्धावस्था और रोग के कारण उठ-बैठ नहीं सकते थे । वे बहरे और गूंगे हो गए थे, पर अभी भी मुख्य आमात्य बने हुए थे । वे 'एम्बूलेश' में विधान मण्डल जाते थे और इशारे से जवाब देते थे ।"[४६]

इस परम्परा में नागार्जुन का 'हीरक जयंती' उपन्यास प्रकाशित हुआ । आँचलिक कथा-साहित्य में अग्रगण्य होने के बाद भी बाबा नागार्जुन ने 'हीरक जयंती' में राजनीतिक भ्रष्टता, सामाजिक अध:पतन, साहित्य एवं पत्रकारिता की चाटुकरिता आदि का सटीक वर्णन कर व्यंग्य के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है । 'हीरक जयंती' में वे कुछ व्यक्तियों के परिचय देते हुए झूठ का परदा फाडकर फेंक देते है - रेवती रंजन प्रसाद सिंह की प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए लिखते है - "मजदूरों की माँगो का ट्रिब्युनल के मर्तबान में डलवाकर उनका अचार डालना कोई भला आपके मिल मैनेजर से सीख जाय । दो मजदूर नेताओं को आपके कर्मचारियों ने हमेशा के लिए लापता कर दिया है । विनोबा जी आए तो पानी के अंदर डुबी रहनेवाली पाँच बीघा जमीन का दान पत्र राजा साहब ने संत के चरणों में अर्पित किया ।"[४७] एक ओर मजदूरों का शोषण करने की और

वाहनों को देखकर लोगों की इज्जत की जाती है । उलूक कथा में इसी प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है - "आदमी आखिर अपने वाहन से ही तो जाना जाता है । कोई सायकिल पर आता है, तो उससे खडे-खडे बात की जाती है । स्कुटर वाले के लिए लान में कुर्सियाँ बिछाई जाती है । कार-वालों को ड्राईंग रुम में बैठाया जाता है ।"[४९]

डॉ. नरेन्द्र कोहली का उपन्यास 'आश्रितों का विद्रोह' जो व्यंग्य का अगला सोपान है । इस उपन्यास की मूल संवेदना शासन विरोधी है । उपन्यासकार ने वर्तमान शासन व्यवस्था की विसंगतिपूर्ण स्थितियों पर व्यंग्य किया है । उपन्यास की कथा विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक परिद्यों को छूती है । इस बिगड़ती हुई स्थितियों को उपन्यासकारने बड़े अच्छे ढंग से लिखा है, "जैसे पत्नी का स्वास्थ देश की आर्थिक स्थिति के समान बिगड़ता जाता है । विशेष रुप से उसकी खाँसी दिनों-दिन महँगाई के समान बढ़ती जाती है, बढ़ती जाती है ।"[५०] इस में आर्थिक स्थिति को लेकर महँगाई पर उपहास किया है ।

डॉ. शंकर पुणतांबेकर जी के 'एक मंत्री स्वर्ग लोक' में इस उपन्यास के माध्यम से मंत्रीपद की विसंगतियों को उजागर किया है । लोकतंत्र की धज्जियाँ पुणतांबेकर ने इस प्रकार उड़ायी है, "लोकतंत्र ! चित्रगुप्त ठहका लगाते हुए बोले पब्लिक सर्वेंटस की तरह तुम्हारा यह लोकतंत्र कहते हो, क्या सही मायने में वह लोकतंत्र है ? वास्तव में तो इसे 'दलतंत्र' कहना चाहिए । शासन का सारा तंत्र लोकहित के नाम पर शासक दल के हित में लगा रहता है ।"[५१]

डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी के उपन्यास 'दर्पण झूठ न बोले' में व्यंग्य चित्रों के द्वारा प्रजातंत्र के सरकार, सरकारी कर्मचारी, प्रशासक, पुलिस, सत्ता, सत्ताधारी पार्टी, विपक्ष पर व्यंग्य किया है । जनता अंग्रेजी नहीं पढ़ सकती इस पर व्यंग्य करते हुए लिखते है, "जनता एक स्त्री है, जो लाल से एक किलो शक्कर बारह रुपये में खरीदती है जबकि रसीद पर वन के जी शुगर फोर रुपीज लिखा होता है ।"[५२]

सन १९८० के पश्चात व्यंग्य उपन्यास में मुख्य रुपसे डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी का 'मंत्रीजी के निजी सचिव की डायरी' समाज और राजनीति की विसंगतियों पर तीखी चुटकियाँ ली है, जो सचेत करती है ।

इस प्रकार आधुनिक काल में व्यंग्य उपन्यास की परंपरा विकसित हुई है । आधुनिक व्यंग्य उपन्यास जो विरोधाभासपूर्ण स्थितियों का पर्दाफाश करते हुए समाज में फैली हुई कुरीतियों तथा अवांछनीय तत्वों से मुक्त कराने के लिए पाठक को झकझोर कर रखने में समर्थ है । आधुनिक हिंदी व्यंग्य उपन्यासकारों में प्रेमचंद, जी.पी.श्रीवास्तव, रांगेय राघव, केशवचंद्र वर्मा, पाण्डेय बेचन शर्मा, हरिशंकर परसाई, नागार्जुन, रेणु, नरेन्द्र कोहली, शंकर पुणतांबेकर, बरसानेलाल चतुर्वेदी, सुदर्शन मजीठिया एवं सरोजनी प्रीतम आदि उपन्यासकारोनें व्यंग्य उपन्यास परम्परा को आगे बढाया है । आधुनिक उपन्यासकारो ने यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए विरोधाभासपूर्ण स्थितियों, विसंगतियो, और विद्रुपताओं का पर्दाफाश किया है । प्रतीक शैली में आक्रोश पूर्ण व्यंग्य का सृजन किया है । इससे स्पष्ट होता है कि, आधुनिक व्यंग्य उपन्यास का विकास निरंतर होता रहा है ।

२.४.४.३ आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में व्यंग्य :

कविता और उपन्यास की तरह हिंदी कहानी साहित्य में भी व्यंग्य विस्तार से मिलता है । आकार की लघुता के कारण कहानी पाठकों का सहज स्नेह पाती है । आधुनिक हिंदी कहानियों में प्रेमचंदजी के पहले भी व्यंग्य अल्प मात्रा में मिलता है किंतु प्रेमचंद ने ग्राम्य जीवन का सुक्ष्मता से अध्ययन किया है और उन्हें अपने अमर साहित्य के लिए वहीं से कथा वस्तुएँ भी मिली है । प्रेमचंद की कहानियाँ 'नशा', 'मनोवृत्ति', 'कफन', 'बूढ़ी काकी', 'सवाशेर गेहूँ', 'पूस की रात', 'शतरंज के खिलाडी' आदि कहानियों में व्यंग्य की पैनी धार मिल जाती है । मोहन राकेश की कहानियों में 'क्लेम', 'परमात्मा का कुत्ता', 'एक और

जिंदगी', 'मिसपाल', 'आर्द्रा', 'सुहागिने', 'मलबे का मालिक', 'फौलाद का आकाश', 'उसकी रोटी', 'जख्म', 'जानवर और जानवर', 'पाँचवे माले का फ्लैट' आदि कहानियों में व्यंग्य किया गया है । कमलेश्वर की 'दिल्ली में एक मौत', 'जार्ज की नाक', राजेंद्र यादव की 'तलवार', 'पंचहजारी', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है ', अमरकांत की 'डिप्टी कलेक्टरी', 'दोपहर का भोजन', यशपाल की 'परदा', 'अपना अपना भाग्य', भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत', 'यादे', 'सिफारशी चिट्ठी' आदि कहानी में मनुष्य व्यवहार को लेकर सूक्ष्मता से व्यंग्य किया है।

स्वातंत्र्योत्तर कालीन कहानियों में व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। हरिशंकर परसाईजी की 'भोलाराम का जीव', 'सदाचार का तावीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'मुण्डन', 'एक तृप्त आदमी की कहानी', 'राग-विराग', 'हनुमान की रेलयात्रा' में प्रचुर व्यंग्य मिलता है । शरद जोशीजी की 'बुद्ध के दाँत', 'हिटलर और आँचू तम्बाखुवाला', 'मुद्रिकारहस्य', 'यमदूत और नर्स' आदि कहानियों में व्यंग्य है । रवीन्द्रनाथ त्यागी की 'ठाकुर साहब', 'एक रेखा चित्र', 'डिनर', 'सुन्दर कली', 'पाँच लडकियों की कहानी' आदि व्यंग्य प्रधान कहानियाँ है । नरेन्द्र कोहलीजी की व्यंग्य प्रधान कहानियों में 'कैनोपी का स्वयंवर', 'मंदिर और स्कूल', प्रमुख कहानियाँ है । श्रीलाल शुक्ल की 'मुलाकात', 'चौराहे पर', 'पहली चूक', 'धोखा', 'अश्वमेघ', 'बया', और 'बन्दर' व्यंग्य कहानियाँ है । डॉ. शंकर पुणतांबेकर की कहानियों में 'अभिनेत्रियों का अलबम', 'चाचाजी द ग्रेट', 'एक कबुतर' और 'प्रेम पुराण', 'बात एक रात की', 'अंगुर खट्टे नहीं है' प्रमुख व्यंग्य कहानियाँ है । प्रेम जनमेजय की 'राजधानी में गँवार,' 'जनतंत्र की कथा', 'सीता अपहरन', डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी की 'एक है सुरिन्दरलाल', रास बिहारी पाण्डेय, श्रीमती उषा बाला, रोशनलाल सुरीवाली आदि की व्यंग्य कहानियाँ प्रमुख है ।

प्रेमचंदजी की 'कफन', 'नशा', 'मनोवृत्ति', 'बुढ़ी काकी', 'सवाशेर गेहुँ', 'पूस की रात', 'शतरंज के खिलाडी' आदि में व्यंग्य की पैनी धार मिल जाती है । प्रेमचंदजी ने 'बुढ़ी काकी' नामक कहानी में नारी के कृत्यों की अपेक्षा उसके मनोभावों की विशेषता को स्पष्ट किया है । इसमें बूढ़ी काकी के स्वभावित मनोवैज्ञानिक इच्छा और भूख के भाव का चित्रण व्यंग्यात्मक से स्पष्ट किया है, जो सदा-स्मरण रह जाता है, "अब लाल-लाल, फुली-फुली नरम पूड़ियाँ होंगी। रुपा ने भली भाँति मोयना दिया होगा । कचौरिया ! अज वाईन और इलायची की महक आ रही होगी । एक पुरी मिलती तो जरा हाथ में लेकर देखती, क्यों न चलकर कडाह के पास सामने ही बैठूँ पूड़ियाँ छन-छन कर तरैती होगी । कडाह से गरम-गरम निकालकर थाल में रखी होगी ।"[५३] बूढ़ी काकी की दूर्दशा को चित्रित करते हुए सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है ।

'दो बैलों की कथा' के पहले अनुच्छेद में प्रेमचंद गधे के गुणों का वर्णन करते हैं फिर गधा और बैल की तुलना उसके बाद अपना एक निष्कर्ष भी प्रस्तुत करते हैं, "और कई रीतियों से वह बैल अपना असंतोष प्रकट कर देता है । अतएव उसका स्थान गधे से नीचा है ।"[५४] बैलों के साथ होनेवाले मनुष्य के व्यवहार पर प्रेमचंदजी ने यहाँ व्यंग्य किया है । 'कफन' कहानी सामाजिक व्यवस्थापर व्यंग्य करनेवाली है । 'शतरंज के खिलाडी' कहानी में मनुष्य की प्रवृत्तिपर व्यंग्य किया गया है तो 'पूस की रात' में सामाजिक विषमता पर व्यंग्य किया गया है ।

मोहन राकेश की 'क्लेंम', 'एक और जिंदगी', 'मिसपाल', 'आर्द्रा', 'सुहागिने', 'मलबे का मालिक', 'आखिरी सामान', 'उसकी रोटी', आदि कहानी में रिश्वतखोरी, अव्यवस्था, बेपरवाही, लालफितशाही में जकड़े मानव की पीड़ा पर व्यंग्य किया है । राकेशजी की 'जानवर और जानवर', 'पाँचवे माले का

फ्लैट' आदि कहानियों में व्यक्तिगत एवं सामाजिक विसंगतियों पर मर्मांतक प्रहार किया है, जैसे 'जानवर और जानवर' कहानी में धर्म के काले पक्ष पर व्यंग्य किया है । कहानी का जॉन कहता है, "यह अपने को पादरी कहता है । सवेरे परमात्मा से संसार - भर का चरित्र सुधारने के लिए प्रार्थना करेगा और रात को... हरामजाद ।"[५५] व्यंग्य के छींटे इस कहानी में जान डालते हैं और 'जानवर' का प्रतीक इसके अंशो को बिखरने नहीं देता ।

'परमात्मा का कुत्ता' एक अत्यंत सशक्त कहानी है जिसमें देश में पनपने वाले भ्रष्टाचार एवं सरकारी अफसरों के अमानवीय व्यवहार का चित्रण है। 'मलबे का मालिक' कहानी में बँटवारे के संदर्भो को अत्यंत मर्मिकता से उठाया गया है । मोहन राकेश ने आधुनिक मनुष्य के जीवन को सभी अंगो से देखा है और सुक्ष्म तथा यथार्थसे विश्लेषित करने में उन्हें पूरी सफलता मिली है ।

अमरकांत की कहानियों में व्यंग्य उपलब्ध है । उनकी 'दोपहर हा भोजन', 'डिप्टी कलेक्टरी' आदि में व्यंग्य मिल जाता है । 'दोपहर का भोजन' में यथार्थ चित्रण हुआ है । कहानी में आर्थिक स्थिति की दुरावस्था का चित्रण है। कहानी के पात्र मुँह चुराकर रहते है और भीतर-ही-भीतर पीड़ित हो उठते हैं। 'डिप्टी कलेक्टरी' में व्यंग्य करते हुए अमरकान्त लिखते है, "लड़का है तो लेकर चाटो ! सारी खुराफत की जड़ तुम ही हों और कोई नही ! तुम मुझे जिंदा रहने देना नहीं चाहती, जिस दिन मेरी जान निकलेगी, तुम्हारी छाती ठंडी होगी !"[५६] जमुना को रोते हुए देखकर शकलदीप बाबू आपे से बाहर हो जाते है । व्यंग्य से मुंह चिढ़ाते हुऐ इस प्रकार बोलते है, जिसमें व्यंग्य स्पष्ट रुप में दृष्टिगोचर होता है ।

स्वातंत्र्योत्तर कालीन कहानियों में हरिशंकर परसाईजी की कहानियाँ इस दृष्टि से उल्लेखनीय है । 'भोलाराम का जीव', 'सदाचार का तावीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'मुण्डन', 'एक तृप्त आदमी की कहानी', 'मैं हुँ तो प्रेम

का मारा', 'सत्यसाधक मण्डल', 'राग-विराग', 'मन्नु भैया की बारात', 'भगत की गत प्रेमियों की वापसी', 'राम कथाक्षेपक', 'हनुमान की रेलयात्रा' आदि में प्रचुर मात्रा में व्यंग्य मिलता है । परसाईजी की कहानी 'राग-विराग' में धर्म के नाम शील का ढोंग करनेवाले साधु की कथा है । ढोंगी साधु पर व्यंग्य करते हुए परसाईजी लिखते है - "संन्यासी बोले नहीं - नहीं देवी, मुझे संकट में न डाल। मेरे गुरु की आज्ञा है । माता और पुत्री का संग भी हमारे लिए निषिद्ध है । धर्म का आदेश है ।"[५७] संन्यासी के इस वक्तव्य पर स्त्री अत्यंत चिढ़ती है और तमतमाकर बड़े रोष और घृणा से कहती है - "महाराज जी, जो धर्म माता और पुत्री से डरने के लिए कहता है, वह धर्म नहीं हो सकता, वह पाखण्ड है ।"[५७] यहाँ परसाईजी धर्म के पाखण्ड पर व्यंग्य किया है ।

इसी प्रकार 'सत्य साधक मंडल' कहानी में भी एक स्त्री सदस्य के न आने पर मंडल बरखास्त हो जाता है, इसे हरिशंकर परसाईने बडे रोचक ढंग से स्पष्ट किया है ।

'वैष्णव की फिसलन' कहानी में होटल कट्टर पेशा ब्राम्हण का है तथापि उसमें क्रमशः शराब, गोश्त, मिलने लगता है वहाँ कैबरे आ जाता है, वहाँ औरत मिलने लगती है । इसमें कट्टर पेशा ब्राम्हण पर व्यंग्य किया गया है। 'भोलाराम का जीव' कहानी में लालफित और दप्तरी तन्त्र को उजागर किया गया है । 'सदाचार का तावीज' में भ्रष्टाचार प्रयासों के सफल न होने की ओर संकेत किया गया है । इस प्रकार परसाईजी की लगभग सभी कहानियाँ व्यंग्य प्रधान है ।

शरद जोशी के व्यंग्य का फलक बहुत व्यापक है, उन्होंने गल्ली से लेकर दिल्ली तक लिखा है, इनका नाम परसाई के साथ आता है । जोशीजी की 'बुद्ध के दाँत', 'हिटलर और आँचु तम्बाखुवाला', 'मुद्रीका रहस्य', 'यमदूत और नर्स' आदि कहानियों में व्यंग्य मिलता है ।

'बुद्ध के दाँत' कहानी में धार्मिक श्रद्धा का फायदा हर सत्ताधारी चाहे वह राजवंश का हो या जनतन्त्र का लेता रहा है । 'हिटलर और आँचू तम्बाखुवाला' में भी खुफिया ढंग से हिटलर के एकांगी दृष्टिकोन पर प्रकाश डाला गया है । 'यमदूत और नर्स' कहानी में एक भारतीय मिथक यमराज और यमदूत को सजीव आकार देते हैं । इस कहानी में मृत्यु शैय्या पर पड़े, रायबहादूर का पुत्र आनन्द पिता से विरक्त है और नर्स से प्रेम करने लगता है । इसलिए शरद जोशी उसे यमदूत की संज्ञा देते है । यह कहानी डॉक्टरों की फूट और नर्सों के शोषण पर आधारित है । इनकी रचनाओं से स्पष्ट हो जाता है कि, जोशीजी के कहानियों में व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है ।

रवीन्द्रनाथ त्यागी का स्थान व्यंग्य में महत्वपूर्ण है । 'ठाकूर साहब', 'एक रेखा चित्र', 'डिनर', 'मुनि मूषक कथा', 'तैलचित्र', 'भारत माता ग्रामवासिनी', 'सुन्दर कली' तथा पाँच लड़कियों की कथा आदि में व्यंग्य दिखायी देता है । 'पाँच लड़कियों' की कहानी में एक ठेकेदार का बिगड़ा लडका है जो किसी की लड़की, पत्नी और बहन को छेड़ने के जूर्म में जूते खाता है । इस कहानी में एक नेता है जो नये राजनीतिक दल के जन्मते ही उस दल से संबंधित लड़की से शादी कर लेते है । 'डिनर' कहानी में फैशन परस्ती और पाश्चात्यों का अंधानुकरण का चित्र खिंचा है, "थोड़ी देर बाद मैं मेजबान से मिला । मैं पहले से उन्हें कतई नहीं जानता था । दरअसल, मुझे तो एक संभ्रात महिला अपने साथ खींचकर ले गई थी । क्योंकि उनके पति थे दौरे पर और निमत्रंण था पति-पत्नी दोनों के लिए । ऐसे में वे करती भी तो क्या करती ? हॉल में पहुँचकर मैने महसूस किया की काफी जोंड़े हमारी तरह के थे ।"[५८] इसमें फैशन परस्ती एवं पाश्चात्यों का अनुकरण करने पर कटु व्यंग्य किया है ।

DR. BABASAHEB AMBEDKAR MARATHWADA UNIVERSITY
LIBRARY
AURANGABAD

रविन्द्रनाथ त्यागी ने 'सुन्दर कली' में आजाद भारत की हैसियत पर व्यंग्य किया है, जैसे "हैसियत होती है ठेकेदारों की, रिश्वतखोर अफसरों की, झूठी भविष्यवाणी करने वालो पंडों की, दल बदलने वाले राष्ट्रनायकों की, रोज प्रेमी बदलने वाली वेश्याओं की और सुंदरकली जैसे हाथिनियों की।"[५९] इस प्रकार सुन्दर कली में संपादक पर खेद व्यक्त किया है, जो कलाकार की कदर कभी करते नहीं है। इस प्रकार रवीन्द्रनाथ त्यागी ने सभी स्थितियों की विसंगतियों और विद्रुपताओं पर व्यंग्य किया है।

नरेन्द्र कोहली वर्तमान राजनीति के सबसे बड़े षडयंत्र को अत्यंत कुशलता से उद्‌घाटित करके अपनी सजग दृष्टि और विश्लेषण क्षमता से सशक्त व्यंग्य करते है। 'मन्दिर और स्कूल' कहानी में अंध धार्मिक मानसिकता के पक्ष को उजागर किया गया। तार्किक धरातल पर दोहरापन है कि, भगवान को सर्वप्रथम मानते हुए भी उसे इतना अशक्त मानना कि उसकी रक्षा का दायित्व अपने उपर अनुभव करना है। जैसे - "यदि बच्चों को पढ़ने के लिए स्कुल न मिला तो हमारे बच्चे आवारा हो जाएँगे ? मैने कहाँ, भगवान के रहने के लिए मन्दिर न मिला तो उसके आवारा होने की कोई सम्भावना है क्या ?"[६०] इस प्रकार धार्मिक पक्ष को उजागर करते हुए भगवान के दोहरेपन को स्पष्ट किया है।

'अनागत' में नरेन्द्र कोहली डॉक्टरों की संख्या में वृद्धि और अनुपात में मरिजों की कमी से उत्पन्न विसंगति पर व्यंग्य करते है। 'एक सरकारी क्वार्टर' मे नरेंन्द्र कोहली ने क्वार्टर उपलब्ध कराने की योग्यता के आधार पर प्रेम-पात्र की बदली पर रोचक व्यंग्य किया है, जैसे "एक सरकारी क्वार्टर वाह, दिल्ली में एक सरकारी क्वार्टर बस हिंडीबा से विवाह किया कि सरकारी क्वार्टर मिला। मुझे लगा, मेरे मन में आज तक जितने तीर लगे, सब हिंडीबा के नाम के ही लगे। संयोगिता से मिलना तो बहाना था।"[६१] इस प्रकार नरेन्द्र कोहली

349286

जी के कहानियों में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व्यंग्य का प्रमाण मिलता है।

श्रीलाल शुक्ल का सर्वाधिक व्यंग्य अव्यावहारिक शिक्षा तथा शोध-प्रणाली पर है । उनकी 'जीते हुए नेता से मुलाकात', 'चौराहे पर', 'पहली चूक', 'धोखा', 'अश्वमेघ', 'बया और बन्दर' आदि कहानियों में एक सुलझी हुई दृष्टि का परिचय मिलता है । दोहरे व्यक्तित्व और आचरण की विसंगति को 'दुभाषि' कहानी में रेखांकित किया गया है । 'साहब का बाबा' में वे अफसर के बच्चे की अभद्रता कुरुपता दर्शाते हैं । तथाकथित उच्चवर्ग पर व्यंग्य करनेवाले श्रीलाल शुक्ल का दृष्टिकोन सामान्यवर्ग - के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रहा है ।

डॉ. शंकर पुणतांबेकर ने अनेक व्यंग्य कहानियाँ लिखी है, 'अभिनेत्रियों का अलबम', 'चाचीजी द ग्रेट', 'एक कबुतर और प्रेम पुराण', 'विजीट यमराज' की 'अंगूर खट्टे नहीं' आदि कहानियों के माध्यम से पुणतांबेकरजीने मानव जीवन की तमाम विसंगतियों को सुक्ष्मता से जाँचा और परखा है । पुणतांबेकरजी ने दानपुण्य के ढकोसलो को उजागर करते हुए 'अंगूर खट्टे नहीं है' में लिखा है, "अरे पुण्यात्मा वगैरह कुछ नहीं है । लुटेरा है लुटेरा, ये धर्मशाला, दवाखाना, स्कूल, मन्दिर सब मेरी अलग-अलग समय की धमकियों में से बने है । धमकी देते ही हाथ जोड़कर किसी मनौती पर आ जाता ।"[६२] इस प्रकार दान-धर्म को झूठा साबीत करते हुए पुणतांबेकरजी ने व्यंग्य किया है । पुणतांबेकरजी का व्यंग्य फलक विशाल है वह सारे जीवन के कोनों को स्पर्श करते है । इन विविध कथ्यों को अंगीकार करनेवाले व्यंग्य की संप्रेषण शक्ति भी बहुविध है ।

प्रेमजनमेजय ने नेताओं की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है । बढ़ती हुई नेताओं की आबादी देखते हुए प्रेमजनमेजय कहते है कि, "जहाँ मुहल्ला होता है वहाँ कोई-न-कोई नेता आवश्यक होता है ।"[६३] इस प्रकार प्रेम जनमेयज ने हमारे इर्द-गिर्द फैली छोटी-बड़ी विकृतियों को बखुबी पकड़ा है ।

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी का रचना संसार बहु-आयामी और बहुढंगी है । जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ व्यंग्यकार की नजर न गई हो सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र के साथ-साथ साहित्यिक, सांस्कृतिक क्षेत्र की और भी उनका ध्यान गया है । सबसे अधिक रचनाएँ शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियों की है । उनकी 'झड़ते बालों की दास्तान', 'एक है सुरिन्दर लाल' तथा 'रिसर्च गाथा' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य कहानियाँ है । डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी रिसर्च गाथा कहानी की भूमिका में लिखते हैं, "जिस इलाके में रहता हूँ उसकी कुल पाँच समस्याएँ हैं । कापियाँ जाँचकर उसके बील को चेक रुप में प्राप्त करना, तरक्की पाना, पाठ्यक्रम में पुस्तके लगवाना समितियों के सदस्य बनाना और सहकर्मियों के कार्यकलापों की शास्त्रीय समीक्षा करना ।"[६४] इस प्रकार शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र को लेकर व्यंग्य किया है, क्योंकि तिवारीजी युनिवर्सिटी के हिंदी विभाग में सेवारत थे अत: इन्होंने इस माहौल का अंकन गइराई से किया था । तिवारीजीने व्यंग्य के माध्यम से समाज की दुर्बलताओं को नष्ट करके नूतन समाज के निर्माण की आकांक्षा की है ।

हिंदी कहानी की व्यंग्य परम्परा को देखनेपर निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि, कहानी में व्यंग्य सही तौर पर परसाई और जोशी के लेखन के साथ ही आया है। यद्यपि व्यंग्य का पुट प्रेमचंदजी के कहानियों में भी दिखायी देता है । कहानी परम्परा के विकास में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, रवीन्द्रनाथ त्यागी, नरेन्द्र कोहली, श्रीलाल शुक्ल, शंकर पुणतांबेकर, प्रेमजनमेजय, बालन्दुशेखर तिवारी, रासबिहारी पाण्डेय, उषा बाला एवं रोशनलाल सुरीरवालाजी की कहानियों का योगदान महत्व का रहा हैं । इन सभी व्यंग्य कहानीकारोंने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सभी तरह की विसंगतियों और विद्रुपतओं पर लालित्यपूर्ण शैली में व्यंग्य किया है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि, कहानी साहित्य में व्यंग्य स्पष्ट रुप में दृष्टिगोचर होता है।

२.४.४.४ आधुनिक हिंदी नाटक में व्यंग्य :

प्रस्तावना :

आधुनिक हिंदी व्यंग्य नाटकों का प्रारम्भ भारतेंदु हरिश्चंद्र से माना जाता है । उनके नाटकों में 'भारत दूर्दशा' और 'अंधेर नगरी' व्यंग्य प्रधान नाटक है । भारतेन्दु मे नाटक के माध्यम से भारतीयों की दुर्बलताओं, हीनताओं और अभावों का चित्रण किया है । प्रसाद के 'ध्रुवस्वामिनी' में भी व्यंग्य के छीटें अवश्य मिल जाते हैं । मोहन राकेश का 'आधे अधुरे' सामाजिक विसंगतियों का नाटक है । इसमें विडम्बनाग्रस्त मध्यवर्गीय परिवार का प्रत्येक व्यक्ति अपने आप को आधा-अधूरा अनुभव करता है, और संत्रास भोगता है । डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में से 'सूर्यमुख', 'कलंकी', 'मिस्टर अभिमन्यु', 'कर्फ्यु' तथा 'एक सत्य हरिश्चन्द्र' आदि कृतियाँ व्यंग्य की दृष्टि से उल्लेखनीय है । गिरिराज किशोर का 'प्रजाही रहने दो' राजनीतिक मूल्यहीनता का नाटक है । अमृत नाहटा का 'किस्सा कुर्सी का' राजनीतिक वातावरण को प्रस्तुत करता है । ज्ञानदेव अग्निहोत्रीजी का 'शुतुरमुर्ग' राजनीति पर प्रहार करनेवाला व्यंग्यात्मक नाटक है। विनोद रस्तोगी के 'जनतंत्र -जिन्दाबाद' नाटक में राजनीतिक छलो और चुनावी-कपटों का पर्दाफाश किया गया है । मणि मधुकर के 'दुलारी बाई' और 'रसगंधर्व' में सांप्रत व्यवहारों की चीरफाड़ है । नरेन्द्र कोहली के 'शम्बुक की हत्या' नामक नाटक के माध्यम से भारतीय स्वातंत्र्योत्तर परिदृश्य को उजागर किया है । सुशील कुमार सिंह का नाटक 'सिंहासन खाली है' इसमें अपातकाल पूर्व की मन:स्थितियों का चित्रण किया गया है ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'बकरी', मुद्राराक्षस का 'आला अफसर', 'उत्तर उर्वशी' शरद जोशी का 'अंधो का हाथी', 'एक था गधा ऊर्फ अलदा खाँ' आदि उल्लेखनीय नाटक है । भीष्मसाहनी का 'कबीर खडा बजार में' कृष्ण

किशोर श्रीवास्तव का 'अपनी कमाई', 'न धर्म न ईमान', सुरेश चन्द्र शुक्ल के 'लडाई जारी है', 'कुत्ते', 'आकाश झुक गया' आदि प्रमुख व्यंग्य नाटक है ।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने नाटक के माध्यम से भारतीयों की दुर्बलताओं, हीनताओं और अभावों का चित्रण 'भारत - दुर्दशा' में किया है । इस काल में जनजागृति के लिए नाटक ही सर्वोत्तम विधा थी । अभिनय के माध्यम से जनता में चेतना जगाई जा रही थी । 'भारत दुर्दशा' का उद्देश्य भी देश की तत्कालीन स्थिति का चित्रण करना ही था ।

इस महत् उद्देश्य के कारण यह नाटक इस समय तो ग्राह्य था ही, आज भी, या किसी और देशकाल में भी वह इतना ही आकर्षक रहेगा क्योंकि देश में शोषण की स्थितियों और सामाजिक, आर्थिक अभाव इसी रुप में विद्यमान रहेंगे । व्यंग्यात्मक रुप में देश की दुर्दशा और विदेशी शासन के अत्याचार का चित्रण इसमें किया गया है । वर्तमान दुर्दशा का चित्रण कर देशवासियों के जातीय स्वाभिमान तथा आत्मगौरव को जगाने का कार्य व्यंग्य के माध्यम से इस प्रकार किया है, जैसे -

"रोवहू सब मिली कै, आवहु भारत भाई ।
हा हा ! भारत दुर्दशा न देखी जाई ।" [६५]

सबसे पहले भारत की दुर्दशा पर आँसू बहाए गए हैं । यह नाटक गुदगुदाता हुआ हमें अपनी स्थितियों के प्रति सचेता करता है ।

देश के स्वर्णिम अतीत का गौरव गान करवा के अंग्रेज राज के सुधारों की ओर संकेत करके भी यह पीड़ा व्यक्त की गयी है,

"अंग्रेजराज सुख साज, सजे सब भारी ।
पै धन विदेश चालि, जात, यह अति ख्वारी ।"[६६]

उत्सुकता के जरिए जीवन की विसंगतियों से पलायन की और संकेत भी करता है । यहाँ पात्रों के आपसी संघर्ष एवं संवादों के कारण व्यंग्य की गहराई को स्पष्ट किया गया है । सावित्री कहती है कि, महेंद्र की हालत अच्छी थी, तब अपने परिवार की उपेक्षा कर दोस्तों के साथ पार्टियों में, दावतों में, शराब में बेहिसाब रूपये-पैसा बहाता रहा, "दोस्तों को अपना फुरसत का वक्त काटने के लिए महेंद्रनाथ की जरूरत है । महेंद्र के बिना कोई पार्टी नहीं । महेंद्र के बगैर किसी पिकनिक का मजा नहीं आता था ।"[६८] आधे-अधूरे में परिवार की विपन्नावस्था पर व्यंग किया गया है । स्त्री पुरूष में अधूरापन महसूस करती है । इस बात पर व्यंग्य किया गया है । इस नाटक की प्रधान नारी पात्र सावित्री के नाम में ही व्यंग्य छिपा है ।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में से 'सूर्यमुख', 'कलंकी', 'मिस्टर अभिमन्यु', 'कर्फ्यु', 'एक सत्य हरिश्चंद्र', आदि कृतियाँ व्यंग्य की दृष्टि से उल्लेखनीय है । 'सूर्यमुख' लाल की एक बहुचर्चित नाट्य कृति है । इसका कथानक महाभारत के अंतिम चरण से सम्बन्धित है । इसमें कृष्ण-रूक्मिणी का प्रद्युम्न कृष्ण की पत्नी वेनुरती अर्थात पुत्र-माता के प्रणय की कथा वर्णित है। मिस्टर अभिमन्यु में हमारी आज की जनतांत्रिक व्यवस्था अपने भ्रष्ट रूप में एक ऐसे चक्रव्युव्ह का स्वरूप प्राप्त कर चुकी है, जिसमें हमारी आत्मा, जीवन मूल्यों की हत्या हो जाती है और हम निरात्म दैहिक जीवन जीने के लिए अभिशप्त हो जाते हैं । इससे बाहर निकलने का रास्ता नजर नहीं आता दूसरी और चक्रव्युह के भीतर फँसे होने के कारण हमारी सांस घुँट रही है "पूरे देश की, देश भर के हर नागरिक की लगभग यही नियति है । व्यवस्था का कोई न कोई अंग उनका गला काटने को उतारू है, चाहे व सरकारी अधिकारी हो, चाहे वह राजनीतिज्ञ नेता हो, चाहे वह पुँजीपति सरदार हो, चाहे समाज की कोई और ही व्यवस्था

हो। हर व्यवस्था अंतत: एक चक्रव्यूह में परिणत हो जाती है । जिसके भीतर असंख्य अभिमन्यु घिरे होते हैं ।''[६९] भारत की वर्तमान समाज व्यवस्था एक ऐसा चक्रव्यूह है, जिससे बाहर निकल पाना सरल नहीं है । इस विडम्बना को डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने 'मिस्टर अभिमन्यु' नाटक में प्रस्तुत किया है । 'कलंकी' नाटक में प्रस्थापित व्यवस्था की दबंग प्रवृत्ति पर व्यंग किया गया है ।

गिरीराज किशोर का 'प्रजा ही रहने दो' नाटक राजनीतिक मूल्यहीनता का है । सिंहासन पर रूढ़ होने की प्रबल इच्छा रखनेवाले नेताओं की सत्ता पिपासा की अंध-हाहाकार में शासित प्रजा की कुण्ठा और दिशाहीन भटकावा महाभारत की कथा द्वारा यहाँ प्रस्तुत है । महाभारत में मात्र एक परिवार की सत्ता लिप्सा ने पूरी प्रजा को निगल लिया, उसी प्रकार आज भी शासकों की स्थिति अलग नजर नहीं आती, जो महाभारत जैसी आज भी जस की तस है । इस प्रकार राजनीतिक मूल्यहीनता पर इस नाटक में व्यंग्य किया गया है ।

अमृत नाहटा का नाटक 'किस्सा कुर्सी' का एक राजनीतिक वातावरण को प्रस्तुत करता है, जहाँ सत्ता ही एकमात्र मंजिल है । इस नाटक में जनता के साथ किये गये वादों को भूलकर ही कोई कुर्सी पर बैठ सकता है । इस नाटक में डॉक्टर जनता की बीमारी को देखता है, जैसे - ''इसी बीमारी का नाम है - 'गरीबी' इसमें खाना खाना मना है । गम खा सकते हैं ।''[७०] इस प्रकार जनता की बीमारी, उस का नाम गरीबी को लेकर तीखा आघात अमृत नाहटा ने किया है ।

ज्ञानदेव अग्निहोत्रीजी का 'शुतुरमुर्ग' नाटक कुर्सीवादी राजनीति की व्यंगात्मक अभिव्यक्ति है । प्रतिकात्मक शैली में समकालीन राजनैतिक एवं सामाजिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य करने का प्रचलन नाट्य-विधा में पाया जाता है । इस नाटक की सबसे बड़ीं विशेषता है उसके चुटीले और व्यंग्यात्मक

संवादों में । विसंगतियों पर गहरा घाव बडी सहजता से करने की क्षमता उसमें है । जैसे "बिना शक्ति के देश की सेवा नहीं हो सकती और बिना पद के शक्ति नहीं मिल सकती ।"[७१] इस प्रकार 'शुतुरमुर्ग' सदृश्य आचरण में छिपी उसकी दुर्बलता, धुर्तता, प्रवंचकता के और उन सबकी व्यर्थता को परिहास परक शैली द्वारा उजागर करने में यह नाटक पूर्ण सफल हुआ है ।

मणि मधुकर की 'दुलारीबाई' में मानवीय लालसा का विद्रुप चित्र है । सुविधा और सुरक्षा की लालसा जीवन की सहजता और प्रकृत प्रवाह को खण्डित कर देती है । इसलिए उसके अँधेरे साये से बचकर जीवन की सहजता को प्राप्त करने का संदेश दुलारीबाई और कल्लु भांड की कथा से प्रस्तुत होता है । मणि मधुकरजी दुलारीबाई के पुस्तैनी जूते को लेकर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं, "दुलारी बाई एक नाटक कंपनी चलानेवाली, दुनिया में अकेली, और कंजूस औरत है । उसके पास एक पुस्तैनी जूता है, जिसे उसके दादा ने बनवाया था और जिसे उसके पिता ने पहना और जिसे अब वह खुद भी पहन रही है । उन जूतों को लेकर वह एक अजीब तरह की विवशता झेलती है ।"[७२] दुलारीबाई चाहती है कि जूते को ठीक कराये पर कर नहीं पाती है । वह उस जूते से मुक्त होना चाहती है पर मुक्त नहीं हो पाती । इस प्रकार पुस्तैनी जूतें को लेकर व्यंग्य को उभारा गया है । मणि मधुकरजी के 'रस गंधर्व' नाटक का मूल स्वर राजनीतिक, सामाजिक वास्तव को उजागर करना है । स्थितियाँ उतनी त्रासद विसंगत है कि, नाराज और तल्ख नाटककार का स्वर व्यंग्य में ढल जाता है ।

नरेंद्र कोहली कृत 'शंबूक की हत्या' वर्तमान शासन व्यवस्था, शासन एवं जनता की नैतिकता के खोखलेपन पर व्यंग्य करनेवाला नाटक, पौराणिक कथा से संबंधित नाटक है । ब्राम्हण पुत्र अकर्मण्यता या किसी शुद्र की तपस्या के कारण अकाल ही मृत हुआ है । ब्राम्हण पुत्र को बचाने के लिए

शम्बुक की हत्या की जाती है जो शम्बुक पर किया गया अन्याय है । आज के शम्बुक का पिता अपनी फरियाद आज के सभी अधिकारियों, शासन एवंम व्यवस्था की सभी महत्त्वपूर्ण इकाइयों को सामने प्रस्तुत करता है । और न्याय की माँग करता है ।

नरेंद्र कोहलीजी 'जनतंत्र' को लेकर व्यंग्य करते हुए लिखते हैं, "हमारे देश में जो शासन प्रणाली है उसे लोक जनतंत्र कहते हैं, पर भोले लोग यह नहीं जानते की यह वास्तव में क्लर्क तंत्र है ।"[७३] इस प्रकार नाटक में प्रारंभ से अंत तक व्यंग्य संपृक्त है ।

सुशील कुमार सिंह का 'सिंहासन' खाली है नाटक पाषण युग के भूपति या ईश्वरीय प्रतिनिधि कहलाने वाले राजा से लेकर प्रतिनिधि कहलाने वाले आज के लोग नेताओं द्वारा सत्ता प्राप्त करने के लिए परस्पर संघर्ष, विद्रोह, झूठे वादे और जनता पर अत्यचार करने की कहानी प्रस्तुत करता है । राजनीति पर इसमें व्यंग्य किया गया है ।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का 'बकरी' नाटक भारतीय सामान्य जनता की निरीहता, भीरूता और असहायता को व्यक्त करता है । बकरी गाँधीवादी सिद्धांतों और नैतिकता का प्रतीक है । यह एक विडम्बनापूर्ण ट्रेजेडी है कि नए सत्ताधिकारियों ने जनता को छलने के लिए सबसे ज्यादा तरीके उसी से सीखे जिन्होंने राजनीति में चरित्र और नैतिकता का महत्त्व स्थापित किया था । व्यग्यं की पूरी भंगिमा पूर्ण प्रभाव के साथ नाटक में मौजुद है ।

मुद्राराक्षस के नाटकों में विद्रोह, आतंक, हत्या,और यौन भावना दिखाई देती है । इनके नाटकों में 'आला अफसर', 'तिलचट्टा' नाटक व्यंग्य नाटक है । इन नाटकों के कथ्य में दाम्पत्य जीवन की विसंगती कुंठा मानव मन की विकृति पुरूष-नारी के सम्बन्ध की विसंगती को स्पष्ट किया गया है ।

हमीदुल्ला के 'उत्तर उर्वशी' में धर्म, अर्थ और काम इन तीनों प्रसंगों से जुडे तीन मुख्य दृश्य घटित हुए है । नाटककारने 'उर्वशी' विषयक अवधारणा को स्पष्ट किया है । एक दृश्य में नाटककार स्पष्ट करते हैं, जैसे ''धर्मभीरू पति-पत्नि पेट काटकर जोडी गई जीवन भर की कमाई काशी में गंगा नहाकर बहा आते हैं और संतुष्ट हो जाते हैं कि, जीवन सार्थक हुआ ।''[७४] इस प्रकार धर्म, अर्थ, काम को लेकर नाटककारने व्यंग्य किया है ।

शरद जोशी एक सशक्त व्यंग्य नाटककार हैं । उनके 'अंधो का हाथी', 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ', 'बैंगन की नांव', 'अंधा युग क्रिकेट का' आदि नाटक उल्लेखनीय है 'अँधो का हाथी' में समकालीन-राजनैतिक प्रशासनिक गति-विधियों तथा विडम्बनाओं की व्यंजना की गयी है । समकालीन राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न मंच पर यही घटनाक्रम चलता है । संसद से पंचायत तक तथा सचिवालय से पटवारी कर्यालय तक घटनाक्रम इसमें है । नाटककार ने इस 'प्रति वेदना' का बचकानापन स्पष्ट किया है । 'हाथी-समस्या' के विभिन्न पहलू जो अंधों द्वारा दिये गये निरर्थक है, ''अर्थ शास्त्रियों का यह दृढ-विचार है कि, यदि हम हाथी को पूँछ से पकड़ कर घुमा दे तो हम हाथी का अग्रभाग प्राप्त कर सकते हैं ।''[७५] इसमें व्यंग्य छिपा है ।

शरद जोशीजी का दूसरा नाटक 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' इसमें गधे को मनुष्य समझ लिया है । एक सामान्य सी गलती से उदभूत लतीफे के छोटे से कथासुत्र के सहारे नाटककार ने यहाँ हमारी समकालीन भ्रष्ट राजनैतिक तथा प्रशासनिक व्यवस्था की, सभी विसंगतियों को खोलकर सामने रखा है । शरद जोशीजी समकालीन राजनीति की चरित्र -हीनता तथा स्वार्थांधता को स्पष्ट करते हैं । नवाब साहब की मान्यता है, ''हुकूमत का पहला उसूल यह है कि, आम आदमी को बेवकूफ बनाये रखों ।''[७६] इसी मान्यता के तहत उनकी पूरी

राजनीति फूली-फली है । इस प्रकार शरद जोशीजी के नाटकों में व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है ।

राजेश जैन का 'हिंदी मास्टर', सुरेंद्र कुमार तिवारी का 'एक और राजा' गिरीराज किशोर का 'घास और घोंडा', लक्ष्मीकांत वैष्णव का 'नाटक नहीं' आदि उल्लेखनीय नाटकों ने नौंवे दशक में भी व्यंग्य नाटक की परंपरा को आगे बढ़ाया है । भीष्म साहनी का 'कबीर खडा बाजार में' उस समय की धर्मान्धता, अनाचार, तानाशाही आदि के सामाजिक, परिप्रेक्ष्य में उनके निर्भिक, सत्यान्वेषी, प्रखर व्यक्ति को दिखाने की कोशिश है, भीष्म साहनी ने कबीर द्वारा धर्मांधता पर तीखा आघात करते हुए लिखा है, "जन्म से सभी इन्सान होते हैं । वरना ब्राम्हण का बेटा माँ के पेट से ही तिलक लगाकर निकलता और तुर्क का बेटा खतनी करवाकर निकलता ।"[७७] इस प्रकार सहानीजी ने 'कबीरा खडा बाजार में' धर्मान्धता की बखियाँ उधेडी है । नाटक में कबीर का फक्कड़पन अंदाज, निर्गम अक्खड़ता और उनकी युग प्रवर्तक सोच को स्पष्ट किया गया है । कबीर युग की विडम्बनाओं को एवं विकृतियों को नाटक में उजागर किया गया है ।

कृष्ण किशोर श्रीवास्तव का 'अपनी कमाई' यह नाटक आज की राष्ट्र व्यवस्था पर एवं भ्रष्टाचार करनेवालों की वृत्तिपर व्यंग्य करनेवाला है । नाटक में पुत्र बीमार है । वे एक बड़े अफसर है और रिश्वत लेते हैं । रिश्वत के पैसे से बेटे का इलाज करवाते हैं जिससे बेटे की बिमारी कम होने की अपेक्षा बढ़ती है । तब उनकी पत्नी अर्थात बेटे की माँ रिश्वत की कमाई से इलाज नहीं करना चाहती । वह अपनी कमाई से इलाज करने की सलाह देती है । एक प्रकार यहाँ भ्रष्ट वृत्तिपर व्यंग्य किया है ।

रेवतीसरण शर्मा का 'न धर्म न इमान'यह भी एक व्यंग्य नाटक है । इस नाटक में एक अफसर के भ्रष्ट पत्नी की प्रवृत्तिपर व्यंग्य किया है । 'न

धर्म न ईमान' नाटक का नायक दिनेश इमानदार अफसर है परंतु उसकी पत्नी तारा ज्यादा से ज्यादा अमीर होना चाहती है और वह पति के अपरोक्ष रिश्वत लेने लगती है।

सार रूप में कहा जा सकता है कि, भारतेंन्दु हरिश्चंद्र के 'भारत-दुर्दशा' नाटक में भारतीयों की दुर्बलताओं, हीनताओं का चित्रण हुआ और अंग्रेजों की नीतिपर व्यंग्य किया गया है । जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल, गिरीराज किशोर, अमृत नाहटा, ज्ञानदेव अग्निहोत्री, भीष्म सहानी, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एवं शंकर शेष आदि के नाटकों में व्यंग्य स्पष्ट रूप से मिलता है । इन सभी नाटककारों ने जीवन की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है ।

२.४.४.५ आधुनिक हिंदी एकांकी में व्यंग्य :

नाटक के साथ-साथ हिंदी एकांकी के जन्मदाता मानेजाने वाले भारतेन्दु और उसके पश्चात आनेवाले प्रसादजी के काल में एकांकी का बीज डाला गया और वर्माजी के काल में यह पौधा बनकर उभर आया । डॉ. वर्माजी ने इस पौधे को सींचा और आज यह पौधा एक महावृक्ष बनकर खड़ा है ।

हिन्दी एकांकी के विकास में लगभग सौ एकांकी लिखनेवाले वर्माजी का योगदान अत्यंत महत्व का है । वर्माजी ने ऐतिहासिक, सामाजिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, पौराणिक, समस्या प्रधान, नारी विषयक, भौतिक तथा - हास्य व्यंग्यपूर्ण सभी प्रकार की एकांकियाँ लिखीत हैं । 'बादल की मृत्यू', 'दस मिनट', 'नदी का रहस्य', 'पृथ्वीराज की आँखे', 'चम्पक', 'एक्टेस', 'औरंगजेब की आखिरी रात', 'तैमुर की हार', 'विक्रमादित्य', 'शिवाजी', 'ध्रुवतारिका', 'कौमुदी महोत्सव', 'कलंक रेखा', 'स्वर्णश्री' आदि उनकी श्रेष्ठ एकांकियाँ हैं । तत्कालीन वातावरण और पात्रों का वास्तविक चित्रण उन्होंने किया हैं ।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल ने भी १०० के आसपास एकांकियाँ लिखी है । उनकी एकांकियों में 'शरणागत', 'नाटक बहुरंगी', 'मैं आईना हूँ', 'सुबह से पहले', 'ताजमहल के आँसु', 'पर्वत के पीछे', 'दूसरा दरवाजा' आदि श्रेष्ठ एकांकियाँ हैं । इन में व्यक्ति एवं समाज के जीवनगत मूल्यों पर युगीन राजनीतिक अर्थनीति की तथा नैतिकता की प्रतिक्रियाएँ मुखरित हुई है ।

विष्णु प्रभाकर जी के 'बारह एकांकी' नामक एकांकी संग्रह प्रसिद्ध है । जिसमें 'रक्त चंदन', 'सबेरा' आदि एकांकियों में व्यंग्य मिल जाता है । शरद जोशी की 'प्रेयसी होना', 'बैंगन की नांव', 'हम कहाँ थे' आदि एकांकियों में व्यंग्य प्रचुर मात्रा में मिलता है । तेजपाल चौधरी का 'कालचक्र' व्यंग्य एकांकी संग्रह है । इसमें भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोजगारी आदि विभिन्न विषयों को लेकर तेजपाल चौधरी ने व्यंग्य की वाणी तिखी की है । डॉ. शंकर पुणताम्बेकर ने 'भुख हड़ताल', 'नुक्कड़', एकांकी में कटू व्यंग्य किया है । लक्ष्मीकांत वैष्णव की 'पुलीस - लीला' व्यंग्य एकांकी है । एकांकी कारोंने कथ्य तथा शैली के नये-नये आयाम खोलकर व्यंग्य एकांकी का भण्डार समृद्ध किया है । उपरोक्त एकांकीकारों की एकांकियों में व्यंग्य को स्पष्ट किया है ।

डॉ. रामकुमार वर्मा की सभी एकांकियाँ उद्देश्य प्रेरित है । इनके ऐतिहासिक एकांकियों में नैतिक आदर्शवाद का चित्रण मिलता है । 'शिवाजी' में शिवाजी की नैतिक दृढता, शौर्य, वैयक्तिक चरित्र की निर्मलता, वीरता, मराठों का सांस्कृतिक गौरव, मातृभक्ति, स्वदेशानुराग, शत्रु पक्ष की स्त्री के साथ सभ्य व्यवहार आदि को चित्रित किया गया है । 'कौमुदी महोत्सव' में चंद्रगुप्त और चाणक्य के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके बीच के संघर्ष को चित्रित किया है । 'कौमुदी महोत्सव' का वसुगुप्त एक ऐसा ही व्यक्ति है, वह अपनी मीठी वाणी से चन्द्रगुप्त को कहता है - "विश्राम के क्षणों को निद्रालु बनाने के लिए

राजनर्तकी के नृत्य की आवश्यकता है ।''[७८] उपरोक्त पंक्तियों में राजा की विलासिता पर कटू व्यंग्य किया गया है । डॉ. रामकुमार वर्मा की एकांकी कला हमारे सम्मुख विविधता लेकर आती है । उन्होंने सभी प्रकार की एकांकियों की रचना की है । कुछ रचनाओंमें व्यंग्य का प्रयोग हुआ है ।

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की एकांकियाँ समसामायिक घटनाओं को लेकर लिखी गयी है । उन एकांकियों की तरह नहीं है, जो अखबार की घटनाओं की तरह दूसरे दिन या दूसरे सप्ताह पुराने हो जाते हैं । उनमें युग-बोध की गहन दायित्व-भावना है, और वे मानव के समक्ष उपस्थित ज्वलंत प्रश्नों से जुड़े हुए है । डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल की 'हाथी घोड़ा चुहा' देश की अफसरशाही का सुक्ष्म विश्लेषण करनेवाली एकांकी है । उस एकांकी में अफसर शाही पर तीखा व्यंग्य मिलता है । लाल की 'कॉफी हाऊस में इंतजार' देश की नब्ज को पकड़ने वाली एकांकी है, इसमें व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हुए वे लिखते है, ''याद करो स्वतंत्रता संग्राम के वे दिन ..... ठीक ऐसा ही उसने भी कहा था कि हम स्वेज कॅनाल पार नहीं कर पाऐंगे कि ..... ।''[७९] अपने पूर्णाकार नाटक 'अब्दुल्ला दीवाना' के समान ही इस एकांकी में लाल ने व्यवस्था पर तीखे प्रहार किये है । लक्ष्मीनारायण लाल ने ऐतिहासिक, राजनीतिक एकांकियों के साथ व्यंग्यात्मक एकांकियों का निर्माण किया है, जिससे स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि, लाल की एकांकियों में व्यंग्य छटा जरुर मिलती है ।

शरद जोशी ने समाज की हर प्रकार की बुराई को निशाना बनाकर उस पर प्रहार किया है । उनकी प्रत्येक रचना, शैली की सावधानता के कारण प्रभावशाली है । 'अंधा युग क्रिकेट का' इस एकांकी में क्रिकेट बोर्ड, चयन कर्ता, बोर्ड के पक्षपात, शासकों की अनीति और प्रान्तियता आदि का पर्दाफाश करते हुए लिखते है । विश्वस्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन

१९८७ में भारत में किया गया था पर लगातार हम पराजित होते रहे है इसका कारण हम केवल कमेंट्री सुनने में माहिर है, खेलने में नहीं । टीम में फास्ट बॉलरों का अभाव है, देखा-कहा जाता है, आगे लिखते है, "यदि गांधारी फास्ट बोलर को जन्म देती तो क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड आभारी होता । हमारे खिलाडियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं खेल के प्रैक्टिस की आवश्यकता नहीं वे तो जन्मजात, गर्भावस्था में ही खेलना सीख जाते है ।"[८०] इस प्रकार क्रिकेट की नीति पर व्यंग्य किया गया है, इस प्रकार जोशीजी के 'प्रेयसी होना', 'बैगंन की नांव', 'हम कहाँ थे' आदि व्यंग्यात्मक एकांकियों में व्यंग्य मिलता है ।

डॉ. तेजपाल चौधरी का 'कालचक्र' व्यंग्य एकांकी संग्रह है । इस एकांकी में 'सत्य काम' के माध्यम से वर्तमान जीवन की विभीषिका का चित्रण है । सत्यकाम का सत्य व्रत टूट जाता है । अभाव, कुण्ठा, निराशा, घुटन, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार एक साथ उस पर धावा बोलते हैं । इस प्रकार सत्यकाम के माध्यम से वर्तमान जीवन की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है । 'कागज की मीनारे' में भी आम आदमी के उत्पीड़न को वाणी दी है । आम आदमी हजारों वर्षों से जहाँ का तहाँ है समानता के लोकतंत्र में आम आदमी को अहसास हुआ है कि, मेरा शोषण हो रहा है । इस प्रकार डॉ. तेजपाल चौधरी के 'कालचक्र' एकांकी संग्रह में सशक्त व्यंग्य मिल जाता है ।

डॉ. शंकर पुणतांबेकर दूसरी पीढ़ि के व्यंग्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । इन्होंने व्यंग्य को केवल नूतन कथ्य ही प्रदान नहीं किया बल्कि इस के शिल्प को समृद्ध करने में भी विशेष योगदान दिया है । डॉ. शंकर पुणतांबेकर की 'नुक्कड़' एकांकी में स्वतंत्र भारत में नाना व्याधियाँ है, पर भूख या क्षुधा नाम की व्याधि नहीं हैं । प्रेत और यमराज के संवादों के माध्यम से इसपर व्यंग्य किया है । 'भूख हड़ताल' एकांकी में एक सामान्य मजदूर को

आमरण अनशन पर बिठाकर उसका सारा श्रेय मजदूर नेता हड़प लेता है । हड़ताल पर बैठा मजदूर नाहक मर जाता है । इस एकांकी का कथ्य सामाजिक धरातल पर किया गया कटू व्यंग्य है ।

लक्ष्मीकांत वैष्णव की 'पुलीस-लीला' व्यंग्य एकांकी है, इसमें पुलिस कुचक्र के शिकार एक स्त्री-पुरुष की कथा है । दोनों सहज लोन में बैठे है और पुलिस पुरुष पर आक्षेप लगाती है कि, वह स्त्री को फसाने की कोशिश कर रहा था । पुलिस का कुचक्र लोगों से पैसे ऐंठने के लिए होता है । इस प्रकार पुलिस की नीति पर व्यंग्य किया है, जो मर्मस्पर्शी है ।

अत: यह स्पष्ट हो जाता है कि, आधुनिक हिन्दी एकांकिकारोंने प्रचुर मात्रा में एकांकियाँ लिखी है, उन एकांकिकारों में डॉ. रामकुमार वर्मा, शरद जोशी, विष्णु प्रभाकर आदि प्रमुख एकांकीकार है । इन्होंने अपनी एकांकियों में व्यंग्य का दंश तिखा किया है । उसकी तिलमिलाहट ने व्यंग्य एकांकियों को सफल मंचन से तीक्ष्ण तथा तीखा बना दिया है ।

२.४.४.६ हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं में व्यंग्य :

हिन्दी गद्य व्यंग्यकारों ने व्यंग्य सृजन के लिए समानांतर कई विधाओं को स्वीकार किया है । हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, केशवचन्द्र वर्मा, सुदर्शन मजीठिया, डॉ. नरेंद्र कोहली, रवीन्द्रनाथ त्यागी आदि व्यंग्यकारों की रचनाओं में ऐसी ही विधागत विविधता दिखाई देती है । व्यंग्यकारों ने निबंध, कहानी नाटक, उपन्यास, एकांकी के अतिरिक्त संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी, साक्षात्कार आदि अनेक विधाओं का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है, उदाहरण के लिए रचना को संकेत मात्र कर रहे है ।

१) आत्मकथा :

आत्मकथा में लेखक अपने बारे में बहुत कुछ जानने के कारण लिख सकता है । साहित्य शास्त्रों ने जीवन चरित में सबसे अधिक प्रामाणिक आत्मकथा को माना है । लतीफ घोंघीजी 'किस्सा दाढ़ी का' में बस के सफर की दुरावस्था को लेकर लिखते हैं - "जब मैं घर पहुँचा तो पत्नी ने मेरी आरती उतारी । बोली-परिवार के तुम पहले आदमी हो जो बस में सफर कर रहे थे और सशरीर वापस आ गये । वरना मुझे तुम्हारे लिए सावित्री बनना पड़ता ।"[८१] प्रस्तुत रचना में घोंघोजी ने आत्मकथा में व्यंग्य का परिचय दिया है ।

२) संस्मरण :

संस्मरण में जीवन के किसी भी महत्वपूर्ण भाग या घटना का उल्लेख होता है । इसे कोई भी लिख सकता है, या कोई भी व्यक्ति स्वयं अपने जीवन को किसी महत्वपूर्ण घटना के सम्बन्ध में लिख सकता है । जैसे - रवीन्द्रनाथ त्यागी के व्यंग्य विधा में संस्मरण की छाया स्पष्ट परिलक्षित होती है - "कन्याकुमारी से हमने कुछ समुद्री चीजें खरीदी । छोटे-छोटे शंखो की माला दस रुपये में मिली जो बड़ी सुन्दर थी । थोड़ी दूर जाकर, दुकानदार ने हमें बड़ी हमदर्दी से बताया कि हम ठगे गए ।"[८२] इस प्रकार संस्मरण विधा में भी व्यंग्य मिलता है ।

३) रिपोर्ताज :

रिपोर्ताज में किसी घटना, प्रसंग का यथा तथ्य वर्णन किया जाता है । जिससे पाठक सहज ही प्रभावित हो जाता है । इसमें संक्षिप्तिकरण होने के कारण कसकर साहित्यिक भाषा में परिणत होकर रिपोर्ताज कहा जाता है । रिपोर्ताजकार प्रत्यक्ष दर्शन के आधार पर किसी तथ्य की रिपोर्ट कलात्मक एवं

साहित्यिक रुप में प्रस्तुत करता है । जैसे शरद जोशी लिखते है - "वह गाता था, घूँसा चलाता था । वह गरीब था यह उसके पक्ष में एक ठोस बात थी । वह आवारा था, जंगली था, बदतमीज था, जानवर था, फिर भी हीरो था । वह पूरी भीड़ में अलग नजर आता था । उसे गोली नहीं लगती थी । अजब पितरत थी। हीरोइन उस पर मरती थी । वह रेल की पटरी पर मरने गई थी । हीरो ने उसे बचाया था । वह वक्त से पहुँच गया था । ट्रेन शायद लेट थी ।"[८३] रिपोर्ताज विधा में भी व्यंग्य स्पष्ट रुप में मिलता है । जो इस उदाहरण में स्पष्ट परिलक्षित होता है ।

४) डायरी :

डायरी हिन्दी गद्य साहित्य की एक प्रमुख विधा है, जिसमें रचनाकार की अपनी दिनचर्या दैनिक जीवन या विभिन्न घटनाओं का साक्षात्कार और साल-भर की तिथि समस्यानुसार लेखा-जोखा मौजुद होता है । हरिशंकर परसाई ने 'एक तृप्त आदमी' एन.एल.मास्टर की डायरी नुमा व्यंग्य सृजन किया है, जैसे- "मास्टर ट्युशन पढाकर घर लौटे आये । दाढ़ी बनायी, स्नान किया और बनियान में साबुन लगाया- तीनों काम एक ही साबुन से । भोजन करने बैठे- आस-पास बच्चे ।"[८४] यहाँ एन.एल.मास्टर की डायरी का अंश व्यंग्य में घुल-मिल गया है । जो विधांतर का दृश्य स्पष्ट करने में परिलक्षित होता है ।

५) साक्षात्कार :

जिसमें सीधी जानकारी प्राप्त होकर सत्यांश पाठकों के सम्मुख आता है । शरद जोशी की 'राह किनारे बैठ' में एक मंत्री से बातचीत ली गई है, जिसमें साक्षात्कार की छाया है । इसमें राजनीतिक लोगों की कार्य प्रणाली को लेकर नेताओं के मूर्खतापूर्ण वक्तव्य का पर्दाफाश किया है -

"गरीबी हटाने की माँग जनता की ओर से उठी है या शासन का आग्रह है ।"

लगभग ढाई क्षण मुझे घुरने के बाद बोले "जनता ने की है"

"शासन का कोई आग्रह नहीं है ?" कुछ सोचने पर बोले, "सुनो मेरा पहला बयान गलत है । शासन का आग्रह है, जनता ने माँग नहीं की है ।"[८५] इसमें साक्षात्कार की छाया जरूर मिलती है, साक्षात्कार से व्यंग्य का परिचय दिया है ।

स्पष्ट है कि, आधुनिक हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में व्यंग्य सृजन करने के लिए, निबंध, नाटक, उपन्यास, कहानी के साथ-साथ, डायरी, संस्मरण, रिपोर्ताज, आत्मकथा, साक्षात्कार आदि विधाओं का भी प्रयोग किया गया है । यह विधाएँ व्यंग्य विकास की परम्परा को दृष्टिगोचर करती है ।

२.४.४.७ आधुनिक हिन्दी निबंध में व्यंग्य :

प्रस्तावना :

व्यंग्य और निबन्ध का सम्बन्ध अत्यंत घनिष्ट है । निबन्ध के माध्यम से व्यंग्य की सशक्त अभिव्यक्ति होती है । किसी भी विषय पर निबन्ध रचना हो सकती है । निबन्ध विधा स्वयं पूर्ण विधा है । निबन्धकार व्यंग्य का उपयोग निबन्ध में उचित अवसर पर कर लेते है । अन्य साहित्य विधाओं की अपेक्षा निबन्ध में व्यंग्य अधिक सफलता से प्रयुक्त होता है । इस प्रकार व्यंग्य और निबन्ध घुलमिलकर साहित्य के सृजन में कार्यरत है ।

आधुनिक काल से पूर्व हिन्दी साहित्य का रुप मुख्यत: कविता का था । साहित्य विधा के रुप में निबन्ध की संभावना न आदिकाल में है, न मध्यकाल में एवं रीतिकाल में । अत: व्यंग्य निबन्ध साहित्य की परम्परा का विचार आधुनिक युग में ही विचारणीय है । निबन्ध आधुनिक काल की देन है ।

वह पश्चिम के प्रभाव से विकसित है । गद्य साहित्य की विभिन्न विधाओं के समान व्यंग्य निबन्ध साहित्य का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के युग में ही हुआ है । यह युग नव जागरण युग के नाम से जाना जाता है । राजनीतिक स्थितियों का अवलोकन करनें से यह यथार्थ सामने आता है कि, इस काल में भारत देश पर अंग्रेजों का राजकारोबार चल रहा था । राजनीतिक भ्रष्टाचार, अनाचार, अनीतियों तथा अन्याय, व्यक्ति के अन्तर्मन की दुर्बलता, सामाजिक विकृति, विसंगति, विषमता, आर्थिक वर्गभेद की विडम्बनात्मक स्थिति, धार्मिक दुर्बलता, दुराचार, रुढ़िवादिता, अंधविश्वास आदि विषयों का प्राबल्य निबंध में अधिक रहा है ।

भारतीय शिक्षा में अंग्रेजी शिक्षा का प्रवेश हुआ, जिसके कारण शैक्षिक एवं साहित्य जगत की पृष्ठभूमि में परिवर्तन हुआ है । साहित्य के क्षेत्र में पद्य की प्रधानता के स्थान पर गद्य की प्रस्थापना एवं उसके विभिन्न विधाओं के विकास का शुभारम्भ इसी काल में हुआ है ।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में निबन्ध विधा के सूत्रपात का श्रेय भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को ही दिया जाता है । भारतेन्दुजी एक सफल निबन्धकार रहें है । उन्होंने राजनीति, समाज, धर्म संस्कृति, नीति-आचार विचार आदि पर व्यंग्यात्मक शैली में निबन्धों की रचना की है । भारतेन्दु के प्रमुख व्यंग्यात्मक निबन्ध में 'स्वर्ग में विचार सभा', 'स्त्री सेवा पद्धति', 'मदिरास्तवराज', 'कंकरस्तोयत्र', 'ईश्वर बडा विलक्षण है', 'पाँचवे पैंगबर' आदि व्यंग्य निबन्ध है । पं. बालकृष्ण भट्टजी के संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक निबन्ध रहें हैं । उनके 'वकील', 'जबान', 'नाम', 'बात', 'खटका', 'संसार', 'महानाट्यशाला' आदि में विसंगति पर व्यंग्य किया गया है । पं. बालकृष्ण भट्ट के समकालीन व्यंग्य निबन्धकारों में पं. प्रतापनारायण मिश्रजी का नाम उल्लेखनीय है । 'प्रताप पियुष', 'प्रताप समीक्षा', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप नारायण-ग्रंथावली' आदि मिश्रजी के निबंध संग्रह है।

पं. बदरीनाथ नारायण चौधरी और प्रेमधन के निबन्ध संकलन है ।

द्विवेदी युग में पं. महावरी प्रसाद द्विवेदी खुद सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य निबन्धकार एवं प्रेरणादाता रहे हैं । द्विवेदीजी के लगभग २५० निबन्ध हैं । बाल मुकून्द गुप्त के 'शिवशंभु के चिट्ठे', 'चिट्ठे और खत' प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं । सरदार पूर्णसिंह के 'सच्ची वीरता', 'पवित्रता', 'मजदूरी और प्रेम', 'आचरण की सभ्यता' आदि निबन्ध संग्रह हैं । पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जी के 'कछुआ धरम', 'मारेसि मोहि कुठाऊँ', 'सोहम' आदि प्रमुख व्यंग्य निबन्ध हैं । गुलेरीजी के पश्चात्य बाबू गुलाबराय श्रेष्ठ व्यंग्य निबन्धकार रहे हैं । 'प्रभुजी मेरे औगुन चित्त न धरो', 'सीमावर्ती चोर', 'ठलुआ क्लब' आदि प्रमुख व्यंग्य निबन्ध हैं । द्विवेदी युग के पश्चात आचार्य रामचन्द्र शुक्ल युग में व्यंग्य निबंध की परम्परा शीर्षस्थान पर रही हैं । शुक्लजी के 'चिन्तामणि भाग - १' में व्यंग्यात्मक निबन्ध संग्रहित है । शुक्ल युग में पुन्नालाल बख्शी का 'उत्सव की महत्ता', सियाराम शरण गुप्तजी 'झूठ-सच', हरिशंकर शर्माजी 'मन की मौज' आदि प्रसिद्ध व्यंग्य निबन्ध रहें हैं ।

भारतेन्दुजी ने व्यंग्यात्मक निबन्धों में धार्मिक कर्मकांड, पांखडीपन, रुढिप्रियता, कुप्रवृत्तियों पर जबरदस्त आघात किया है । उन्होंने 'लेवी प्राण लेवी' निबन्ध में स्वार्थ के लिए अंग्रेजों की स्तुति करनेवाले पर व्यंग्य करते हुए लिखा है, "कोई तो दूर से ही हाथ जोड़े आये और दो एक ऐसे थे कि एडीकांग से बदन झुकाकर इशारा करने पर भी उन्होंने सलाम न किया तो एडीकांग ने पीठ पकड़कर उन्हें धीरे से झुका दिया ।"[८६] इसमें अंग्रेजों की स्तुति करनेवाले पर तिखा आघात किया है ।

भारतेन्दुजी के व्यंग्यात्मक निबन्धों में देशदशा तथा शासन व्यवस्था पर कटु प्रहार किया है । 'अंगरेज स्त्रोत' में अंग्रेज जाति के प्रति प्रत्यक्ष व्यंग्य

करते हुए लिखते हैं, "तुम इन्द्र हो तुम्हारी सेना वज्र के समान है- इनकमटैक्स तुम्हारा कलंक है, तुम वायु हो- रेल तुम्हारी गति है । हे मानद ! तुम हमको टाइटिल दो, खिताब दो ; हमको अपना प्रसाद दो हम तुम्हें प्रणाम करते हैं ।"[८७] इस प्रकार भारतेन्दुजी ने अंग्रेज शासन की व्यवस्था पर तिखा एवं कटु आघात किया है ।

'पाँचवे पैगम्बर' निबन्ध में भी स्थान-स्थान पर अंगरेजों पर व्यंग्य किया है । अंगरेजों का नामकरण करते हुए लिखते हैं, "मेरे तीन नाम है । मुख्य चूसा पैगम्बर, दूसरा प्रबल और तीसरा सुफेदा । तू आप अपनी रोशनी से जमाने को जलाकर काला करेगा । मैंने हाफ सिविलाइज्ड किया दुनिया को ।"[८८] इस प्रकार अंगरेजों का पोल खोलने का कार्य पाँचवे पैगम्बर में भारतेन्दुजी ने किया है ।

व्यंग्य भारतेन्दुजी के भाषा की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता है। विशुद्ध व्यंग्यात्मक निबन्ध तो भारतेन्दु जी ने लिखे ही हैं, उनके संस्कृति, साहित्यिक निबन्ध और यात्रा सम्बन्धी निबन्धों में भी व्यंग्य की छटा विद्यमान दिखायी देती है । 'सरयुपार की यात्रा' निबन्ध में बनियों की अच्छी खबर भारतेन्दुजी ने ली है, जैसे "महज बट्टैसियत महाजन एक यहाँ हैं । वह टूटे कपडे में बैठे थे । तारीफ यह सुनी कि वे साल भर में दो बार कैद होते हैं, क्योंकि महाजन का जाल करना फर्ज है और उसको भी छिपाने का शऊर नहीं ।"[८९] इस प्रकार बनियों की अच्छी खबर भारतेन्दुजी ने ली है और उनकी प्रवृत्तिपर व्यंग्य किया है ।

देश की पराधीनता और सामाजिक कुप्रथाओं पर स्वर्ग में विचार सभा निबन्ध में व्यंग्य करते हुए वे लिखते हैं, "विधवा गर्भ गिरावैं, पंडित जी या बाबूसाहब यह सह लेंगे, वरंच चुपचाप उपाय भी करा देंगे, पाप को नित्य छिपावेंगे, अन्ततोगत्वा निकल ही जाए तो संतोष करेंगे पर विधवा का विधिपूर्वक विवाह न हो, फूटी सहेंगे, आँजी न सहेंगे । चाहें पढ़े हो, चाहे मूर्ख, सुपात्र हो कि कुपात्र, चाहे प्रत्यक्ष व्यभिचार करें या कोई भी बुरा कर्म करें, पर गुरुजी है,

पंडित जी है, इनका दोष मत कही, कहोगे तो पतित होंगे, इनकी दो राजी रक्खो।''[९०] इस प्रकार मनुष्य की कुप्रवृत्तियों पर प्रभावपूर्ण ढंग से आघात किया है । भारतेन्दु हरिश्चंद्रजी एक सफल व्यंग्य निबन्धकार रहे हैं । उन्होंने संस्कृति, नीति, आचार-विचार आदि पर व्यंग्यात्मक शैली में निबन्ध की रचना की है । 'अंग्रेजस्त्रोत', 'मदिरास्तवराज', 'स्त्री सेवा' पद्धति में तिलमिला देनेवाला व्यंग्य भारतेन्दुजी ने निबन्ध में प्रस्तुत किया है ।

बालकृष्ण भट्टजी के व्यंग्यात्मक निबन्धों में पूर्ण उन्मुक्तता, स्वच्छन्दता साथ ही आवश्यक गम्भीरता दृष्टिगत होती है । भट्टजी के व्यंग्यों में अत्याधिक तीव्रता और मार्मिकता है 'नाक' पर उनका समर्थ व्यंग्य इस प्रकार है, ''नाक निगारे भी एक बुरी बला है । इस मिट्टी के आदमी को साढे तीन बीता की नाक क्यों गढ़ी है । एक ऐसी नाजुक चीज लगा दी जिसके कट जाने की पग - पग में डर रहती है ।''[९१] इस प्रकार नाक पर किया गया उनका व्यंग्य अत्यंत मार्मिक है ।

'अकिल अजीरन रोग' इस निबंध में भट्टजी ने अंग्रेजी राजपर व्यंग्य किया है । अंग्रेजी राज्य पर व्यंग्य करते हुए उन्होंने लिखा है कि, ''हर एक महकमों के अकिल अजीरन जुटते-जुटते पुलिस सिस्टम बन गया । जिससे सरकार के न्याय में बट्टा लगाने के अलावा अंगरेजी राज अत्याचार और बिद्दत करने में नवाबी के भी कान काटे हुए हैं ।''[९२] इस प्रकार भट्टजी के निबन्धों में व्यंग्य दृष्टिगोचर होता है ।

निस्संदेह भट्टजी भारतेन्दु युग के सर्वश्रेष्ठ निबन्धकार थे । विषय वैविध्य, शैली-वैविध्य, सरसता और जीवन्तता, जिन्दादिली और व्यंग्य हास्यप्रियता के कारण हिन्दी साहित्य में भट्टजी उच्चतम स्थान के अधिकारी है । पं. बालकृष्ण भट्टजी का निबन्ध साहित्य अंधकारमय समाज को उजाले में लाने का प्रयत्न करता है । उनके निबन्धों में हास्य और व्यंग्य की सुन्दर योजना की गयी है ।

शिक्षा की निरुपयोगिता के सन्दर्भ में 'आत्मनिर्भरता' इस निबन्ध में लिखते है, "आत्मनिर्भरता के सम्बन्ध में जो शिक्षा हमें, दुकानदार, बढ़ई लोहार आदि कारीगरों से मिलती है उसके मुकाबले में स्कूल और कालेजों की शिक्षा कुछ नहीं है, और यह शिक्षा हमें पुस्तकों या किताबों से नहीं मिलती ।"[९३] इस प्रकार तत्कालीन शिक्षा के नाम पर अपनी जेब की सेवा मनोरंजन के साथ आमदनी प्राप्त करनेवालों पर कटु व्यंग्य किया गया है ।

'वकील' निबंध में वकीलों की अकर्मण्यता, अथवा धनलोलुपता पर व्यंग्य करते हुए वे लिखते है, "पर सोच होता है, जब ख्याल करो की बन्दर के हाथ में मणि के समान कितने इस पेशे को ऐसा बिगाड़ रहे है कि, वकील झूठ को सच, सच को झूठकर देने के लिए बदनाम हो रहे है ।"[९४] इस प्रकार वकीलों की अकर्मण्यता, अन्याय, अत्याचार, धन लोलुपता पर चुटीला व्यंग्य किया गया है । पं. बालकृष्ण भट्ट के 'नाम', 'बात', 'खटका', 'चलता है', 'क्या होगा जबान' आदि निबन्धों में प्रशासनिक व्यवस्था, सामाजिक स्थिति, धर्मिक स्थिति में जो अनाचार है, उसे समाज के सामने लाने का प्रयत्न किया गया है। उनका व्यंग्य निबंध साहित्य में बहुत बड़ा योगदान रहा है ।

पं. प्रताप नारायण मिश्रजी अपनी रचनाओं में व्यंग्य के तीखेपन से समाज को सचेत कर उन्नति की राह पर ले जाना चाहते थे । वे जातीयता, धार्मिकता, सामाजिक विकृतियों को हटाना चाहते थे । उनके 'खुशामद', 'धोखा', 'मुच्छ', 'होली' जैसे निबन्धों में देशभक्ति, अंधविश्वास पर तीखी चोटे की गयी हैं । 'धोखा' नामक निबन्ध में मिश्रजी व्यंग्य के माध्यम से पाठको को भी सोचने पर मजबूर करते है, "इन दो अक्षरों में भी न जाने कितनी शक्ति है कि, लपेट से बचना यदि निरा असंभव न हो तो भी महाकठिन अवश्य है । जब की भगवान रामचन्द्र ने मारीच राक्षस को सुवर्ण मृग समझ लिया था, तो हमारा क्या सामर्थ्य

है, जो धोखा न खायें ?''[९५] इस प्रकार धोखा इस निबन्ध के माध्यम से धोखा शब्द का मतलब बताते हुए वे सोचने को प्रवृत्त करते है ।

मिश्रजी भारत की तत्कालीन दुर्दशा को देखकर वक्रतापूर्ण शैली में बाबू लोगों पर व्यंग्य करते हुए लिखते है, ''हमारे हिन्दु भाइन को आलिस की ह्याँ ताउँलत है के लाख समझाओं पे सोयबों छोडेंई नायाँ चौबेन माँग की है, गुंसाइन को मरकबे की लत है । धनीम को टेंटई (वेश्या) की लत है, बाबून को अंग्रेज बनने की लत है । कहाँ लौं सहैं, एक एक लत सब को परी है, पे हाय देश सुधार की लत साँची काऊ को नाच दीखें''।[९६] इस प्रकार मिश्रजी ने बाबू लोगों पर धर्म के बाह्याडंबर, पाखंडीपन आदि पर सहजता से व्यंग्य किया है। पं. प्रतापनारायण मिश्रजीने अपने निबंध संकलन 'प्रताप-पियुष', 'प्रताप-समीक्षा', 'निबन्ध नवनीत', 'प्रताप नारायण ग्रंथावली' में भारत की तत्कालीन दुर्दशा को देखकर वक्रतापूर्ण शैली में तिखे आघात किये है ।

प्रेमधन जी ने सरकार की आर्थिक नीति, समाज के आचार-विचार, भारत की दुर्दशा, गरीबों की खस्ता हालत, उच्च वर्ग की कुलीनता, विधवा नारियों की करूण दशा आदि विषयों पर व्यंग्य निबन्ध लिखे हैं । 'प्रेमधन सर्वस्व भाग -२ में' प्रेमधनजी के निबन्धों का संकलन है । हिन्दू धर्म के नाम पर चलने वाले पांखडीपन, अनाचार, बूरे व्यवहार, पुरोहितों के व्यभिचार के सन्दर्भ में व्यंग्य करते हुए वे लिखते है, ''इनमें कहाँ पर कितने है जो पुरोहित की उपाधि पाने के योग्य है ! कितने अपने ब्राम्हणोचित धर्म का पालन करते है, कितने पुरोहित के भेष में रहते है और स्वधर्म रक्षा का प्रयत्न करते है, विरुद्ध इसके कि नाना प्रकार के नीच व्यसन है, दुराचार और कुत्सित कृत्य में लीन रहते है, जिसके दर्शन मात्र से कठिन अंधश्रद्धा का उद्रेक होता है । सुतराम इस धर्म, जाति का, देश का, क्या उपकार है, वा होगा ।''[९७] धर्म के नाम पर पुरोहितों के

पांखडीपन को बुरे व्यवहार को एवं अंधश्रद्धा आदि को निशाना बनाया है । इस प्रकार विषय विविधता प्रेमधन के निबन्ध में मिलती है । उन्होंने सहजता से विलायती व्यापारियों, भारत की दुर्दशा, गरीबों की खस्ता हालत, सरकार की आर्थिक नीति पर कसकर व्यंग्य किया है ।

बालमुकून्द गुप्तजी भारतेन्दु युग एवं द्विवेदी युग के बीच की कड़ी है । इन दोनों युग के बीच में पुल का काम गुप्तजी ने किया है । उन्होंने व्यंग्य को प्रहारक तथा सुधारक के रुप में प्रयुक्त किया है । 'शिवशंभु के चिट्ठे', 'चिट्ठे और खत' उनके प्रमुख निबन्ध संग्रह हैं । इनमें राजनीतिक विसंगतियों के उपर तीखे प्रहार किये गये हैं । इस युग का व्यंग्य तीखा और आक्रमक रहा है । राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक आदि विषयोंपर व्यंग्य निबंध लिखे हैं ।

'शिवशंभु के दिवा स्वप्न' में विदेशी शासन पर व्यंग्य किया है, जैसे - "माई लार्ड नगर में ही हैं, पर शिवशंभु उनके द्वार तक नहीं फटक सकता है, उनके घर चल होली खेलना तो विचार ही दूसरा है । माई लॉर्ड के घर तक प्रजा की बात नहीं पहुँच सकती, बात की हवा तक नहीं पहुँच सकती ।"[९८] गुप्तजी ने तत्कालीन समस्याओं पर व्यंग्य करते हुए अंग्रेज अधिकारियों की नीति, व्यवहार पर करारा व्यंग्य आघात किया है ।

बालमुकून्द गुप्त जी ने वंगभंग घटना पर 'आशीर्वाद' इस निबन्ध में अंग्रेज शासकों द्वारा जनता पर किये जाने वाले अत्याचार का चित्र खींचा है। इस प्रकार बालमुकून्द गुप्त जीने लाचारी, गुलामी, भारतीय समाज की दरिद्रता, अंग्रेजो की शोषित प्रवृत्ति पर तिखे आघात किये हैं ।

द्विवेदी युग के महावीर प्रसाद द्विवेदी सर्वश्रेष्ठ व्यंग्य निबन्धकार एवं प्रेरणादाता है। उन्होंने समाज सुधार की दृष्टि से उद्देश्यपूर्ण व्यंग्यात्मक

निबन्ध लिखे हैं । समाज में व्याप्त अज्ञान, विषमता, अंधश्रद्धा, तत्कालीन शिक्षा प्रणाली, नगर निगम के भ्रष्टाचार, प्रशासन, व्यक्ति तथा समाज के विविध दोषों, विसंगतियों पर उन्होंने व्यंग्य किया है । महावीर प्रसाद द्विवेदीने विविध विषयों पर लगभग २५० निबन्धों की रचना की हैं ।

'म्युनिसिपैलिटी के कारनामें' निबन्ध में नगर निगम के कारोबार भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है, जैसे- "इस म्युनिसिपैलिटी के चेयर मैन श्रीमान बूचा शहा हैं । बाप दादे की कमाई का लाखों रुपया आप के घर भरा है । पढ़े लिखे आप राम का नाम ही हैं । चेअरमैन आप सिर्फ इसीलिए हुए है कि, अपनी कारगुजारी गवर्नमेंट को दिखाकर आप रायबहादुर बन जाये और खुशामदियों से पहर चौसष्ठ घड़ी घिरे रहें ।"[९९]

द्विवेजीने इस में नगर निगम के चेअरमैन का भ्रष्टाचार,भाई-भतीजावाद आदि के संदर्भ में व्यंग्य किया है । द्विवेदजी ने कवियों की अकुशलता, अशुद्ध लेखन, कविता कर्म एक गोरखधन्धा आदि पर व्यंग्यात्मक निबन्धों की रचना की है । 'दण्डदेव का आत्मनिवेदन' निबन्ध में अंग्रेजो के अत्याचार पर व्यंग्य शैली में आघात किये हैं । इस प्रकार महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने अपने निबन्धों का व्यंग्यात्मक शैली में सृजन किया है ।

महावीर प्रसाद द्विवेदीजी अपने समय के कवियों पर 'कवि विवेचन के सापेक्ष सिद्धान्त' इस निबन्ध में तीखा व्यंग्य करते हैं, "आजकल हिन्दी के कवियों ने बड़ा जोर पकड़ा है । जिधर देखिये उधर कवि ही कवि । जहाँ देखिए वहाँ कविता ही कविता । कवि बनाने के कारखाने भी दिनरात जारी हैं । कोई कहता है कि, हमारे पिंगल के प्रचार से गाँव-गाँव में कवि हो सकते हैं । कोई कहता है हमारा काव्य-कल्पमुद्र पढ़ लेने से सैकड़ो कालिदास पैदा हो सकते हैं ।"[१००] इस प्रकार व्यंग्य में तीखेपन के साथ-साथ आवश्यक गम्भीरता भी इस में विद्यमान है ।

महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के निबन्धों की भाषा शैली कभी-कभी मुहावरों के सार्थक उपयोग से अत्यंत तीक्ष्ण हो जाती है । कहीं-कहीं भाषा की विलक्षण वक्रता और विदग्धत दिखाई पड़ती है - 'समालोचना सरोवर के हंस' निबन्ध में आपने लिखा है, "हमारे समालोचक महाशय ने हमारी तुलना एक विशेष जलपक्षी से की है । इस पक्षी को किनारे के कीचड़ में ही सब कुछ मिल जाता है । थैंक यू, जलपक्षियों के परीक्षक जुबाँदानी का किचड़ उछालने वाले वीर आपने कभी उस जलचर को भी देखा है जे भूख के मारे अपने हाथ सिर पैर और आत्मा तक अपने शरीर के कोटर में छिपाकर पानी में गोता लगा जाता हैं।"[१०१] इस प्रकार अंग्रेजी तथा फारसी शब्दों का प्रयोग प्रभावकारी सिद्ध हुआ है। उन्होंने समाज, राजनीति, शिक्षा आदि पर भी अपने निबन्धों में सरस व्यंग्य किये है ।

सरदार पूर्णसिंह ने सामाजिक कुरीतियाँ, धार्मिक, पाखण्ड, अंधविश्वासों, पाखण्डी मौलवी तथा पण्डितों पर 'सच्ची वीरता', 'पवित्रता', 'मजदूरी और प्रेम' आचरण सभ्यता आदि निबन्धों में व्यंग्य किया है । आपके सिर्फ सात-आठ ही निबन्ध रहे किन्तु वे पूरे उचित उद्देश्यपूर्ण, व्यंग्ययुक्त अर्थ से भरे हैं ।

बनारस के पण्डितों के धार्मिक बाह्याडंबर पर व्यंग्य करते हुए सरदार पूर्णसिंह लिखते है, "अंग्रेजी का व्याख्यान, चाहे वह कार्लाइल ही का लिखा हुआ क्यों न हो बनारस के पण्डितों के लिये रामलीला ही है । इसी तरह न्याय और व्याकरण की बारीकियों के विषय में पण्डितों के द्वारा की गई चर्चाये और शास्त्रार्थ संस्कृत ज्ञानहीन पुरुषों के लिए स्टीम इंजिन के फप-फप के शब्द से अधिक अर्थ नहीं रखता ।"[१०२] इस प्रकार सरदार पूर्णसिंहजी ने धार्मिक बाह्याडंम्बर पर व्यंग्य किया है ।

मानव समाज के दोषों का उद्‌घाटन करते समय उन्होंने सर्वथा सक्षम व्यंग्यपूर्ण शैली का सहारा लिया है । पश्चिमी देशों में वैवाहिक जीवन की

अस्थिरता को झूठा बताते हुये वहाँ की झूठी आजादी पर व्यंग्य करते हुए पूर्णसिंह 'कन्यादान' निबन्ध में लिखते हैं, "आजकल पश्चिमी देशों में झूठी और जाहिरी शारीरिक आजादी के ख्याल ने कन्यादान की अध्यात्मिक बुनियाद को तोड दिया है । कन्यादान की रीति जरुर प्रचलित है परन्तु वास्तव में उस रीति में मानों प्राण ही नहीं । कोई अखबार खोलकर देखों उन देशों में पति और पत्नी के झगड़े वकीलों द्वारा जजों के सामने तय होते हैं । और जज की मेज पर विवाद को सोने की अँगूठियाँ, काँच के छल्लों की तरह द्वेष के पत्थरों से टूटती हैं । गिरजे में कल के बने हुये जोडे आज टूटे और आज के बने जोडे कल टूटे।"[१०३] इस प्रकार आजादी के नाम पर चल रहे स्वैराचार पर पूर्णसिंह जी ने व्यंग्य किया है ।

'पवित्रता' इस निबन्ध में लेखक के हृदय की पवित्रता का प्रकाशन हुआ है । उसके अनुसार संसार का कण-कण परमात्मा की ज्योति से प्रकाशित होता है । 'आचरण की सभ्यता' इस निबन्ध में आचरण का महत्व विद्या, कला, साहित्य, धन, राज्य आदि की अपेक्षा कई गुना अधिक है । लेखक ने सभ्य आचरण की अनेक परिभाषाएँ देते हुए पवित्र आचरण वाले व्यक्ति के लक्षण बताये हैं । 'मजदुरी और प्रेम' इस निबन्ध में शारीरिक श्रम को ही सच्ची तपस्या और कृषक, माली, गडेरिया आदि श्रमिकों को सर्वश्रेष्ठ धार्मिक विभूति बताया है ।

गुलेरीजी ने खोखले रीति रिवाज, उच्च-नीच भावना तथा लोगों की स्वार्थ बुद्धि पर व्यंग्य किया है । उनके 'कछुआ धरम', 'मारे से मोहि', 'सोहम' आदि बहुचर्चित व्यंग्य निबन्ध हैं । 'कछुआ धरम' में हिन्दुओं की प्रवृत्ति पर तीव्र प्रहार किये हैं । यह पूरा व्यंग्यात्मक निबन्ध है । हिन्दुओं की पलायन-प्रियता, प्रतिरोध की शक्ति के अभाव और अन्ध रुढ़िवादिता पर व्यंग्य करते हुए लिखते है, हिन्दुस्तान में एकता तब थी अब नहीं, इस तत्कालीन स्थिति पर व्यंग्य किया है, जैसे "लोग कहते है, कि हिन्दुस्तान अब एक हो रहा है । हम

कहते हैं कि पहले एक था, अब बिखर रहा है । काशी की नागरी प्रचाररिणी सभा वैज्ञानिक परिभाषा का कोश बनाती है । उसी की नाक के नीचे बाबू लक्ष्मीचन्द वैज्ञानिक पुस्तको में नयी परिभाषा काम में लाते है । पिछवाड़े में प्रयाग की विज्ञान परिषद और ही शब्द गढ़ती है ।''[१०४] इस प्रकार तत्कालीन हिन्दुस्तान की एकता और अन्तर को स्पष्ट करते हुए यहाँ व्यंग्य से कटू आलोचना करते है । उनके निबन्धों में हिन्दुओं की प्रवृत्ति, पलायन-प्रियता, रुढ़िवादिता पर व्यंग्य किया गया है ।

आचार्य शुक्लजी ने स्वातंत्र्यपूर्व काल में साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक, प्रशासनिक आदि विषयो पर व्यंग्यात्मक निबन्ध की रचनाएँ की हैं । वे निबन्ध को ही एक मात्र गद्य की कसौटी मानते रहे हैं । आपके व्यंग्यात्मक निबन्ध का संग्रह 'चिन्तामणी भाग: एक' में संग्रहीत है । शुक्लजीने श्रद्धाभक्ति में तत्कालीन सौदा-बाजी के युग में नकलीपन के संदर्भ में कहाँ है, ''इस व्यापार युग में ज्ञान बिकता है, न्याय बिकता है तब श्रद्धा ऐसे भाव क्यों न बिके ! पर असली भाव तो इस लेन-देन के व्यवहार के लिए उपस्थित नहीं किए जा सकते। खैर, नकली सही ।''[१०५] इस प्रकार लुप्त होते जा रहे प्रेम, श्रद्धा, सहानुभूति, वात्सल्य, त्याग आदि पर उपहास गर्भ शैली में शुक्लजी ने प्रहार किया है ।

'लोभ और प्रीति' इस निबन्ध में देश प्रेम की गर्वोक्ति करने वालों पर व्यंग्य किया है, जैसे ''प्रेम हिसाब किताब की बात नहीं है, हिसाब किताब करने वाले भाडे पर भी मिल सकते हैं, पर प्रेम करने वाले नहीं ।''[१०६] इस प्रकार देश प्रेम की गर्वोक्ति करनेवाले पर करारा व्यंग्य शुक्लजीने किया है । शुक्लजी ने धार्मिक बाह्याडम्बर, ढोंगी देशप्रेमी, लोभी प्रवृत्ति, कविता-कवि धर्म, आदि विभिन्न विषयों पर लिखे निबन्धों में व्यंग्य किया है ।

बख्शीजी प्रसंगानुसार गम्भीर व्यंग्य की सृजना करते है एवं रोचक निबन्ध शैली इनके सृजन की विशेषता है । उन्होंने जीवन, समाज, साहित्य, संस्कृति, धर्म आदि विविध विषय पर निबन्ध की सृजना की है । बख्शीजी के निबन्धों के अनेक संग्रह प्रकाशित हुये हैं । 'पंचपात्र', 'प्रबन्ध परिजात', 'बिखरे पन्ने', 'तुम्हारे लिए', 'प्रायश्चित', 'तीर्थ सलिल', 'यात्री', 'त्रिवेणी', 'विश्व साहित्य' आदि उनके सुप्रसिद्ध निबन्ध हैं ।

उन्होंने हिन्दु - मुसलमान समस्या पर सामाजिक दृष्टिकोन के साथ धार्मिक दृष्टि से भी सोच विचार करते हुए तीखा आघात किया है, जैसे "दुर्बल पर अत्याचार करना किसी धर्म को मान्य नहीं है ।"[१०७] इस प्रकार बख्शीजीने धर्म के नाम पर व्याप्त भ्रष्टाचारों की भर्त्सना की है । साम्प्रदायिकता, रुढ़िवादिता, धर्मांधता का उन्होंने अपने निबन्धों में विरोध किया है ।

हरिशंकर शर्मा एक प्रमुख व्यंग्य निबन्धकार की दृष्टिसे सुप्रसिद्ध है । शर्माजीने राजनीतिक, साहित्यिक, कालाबाजारी, पुजारी, चोरबाजारी आदि विभिन्न विषयों पर कसकर व्यंग्य किया है । 'मन की मौज' में आपके व्यंग्यात्मक निबन्ध संग्रहित है । आपका 'पिजंरापोल' व्यंग्य निबन्ध बुराइयों पर प्रहार करने में उल्लेखनीय है । 'बंचक विश्वविद्यालय' निबन्ध में साहित्यिको पर कसकर व्यंग्य किया हैं ।

"भावों की उड़ान भाषा का अपहरण, दूसरों के लेख ज्यों के त्यों सभ्यतापूर्वक अपने नाम से छपा देना । पराई पुस्तकों का स्ववशीकरण, तिकडम शास्त्र के समस्त अध्याय, पोलिसी पुराण का परायण, एक दिन में दस गद्य-काव्य और पचास कवितायें तैयार करना । पुराने कवियों की पगड़ी उछालना और नयों का आसमान पर चढ़ाना । लाल पेंसिल की सहासय्यता से ग्रन्थकार

बनना और कैंची की करामत से सम्पादक शिरोमणि कहलना ।''[१०८] इस प्रकार शिक्षा पद्धति, साहित्य साधना पर हरिशंकर शर्माजीने व्यंग्यात्मक प्रहार निबन्धों में किया है ।

उषाबाला के दो व्यंग्य संग्रह है 'युधिष्ठिर के बेटे' और 'कफनचोर का बेटा' इन संग्रह में उषाबाला ने मध्यवर्गीय समाज जीवन की विसंगतियों को आक्रोशात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है । 'फेअरवेल पार्टी', 'कॉल बेल', 'नाईट क्लब', 'दर की तलाश', 'उपहार' आदि रचनाएँ इस बात की पुष्टि करती हैं । 'नरक की जीत' और 'कफन चोर का बेटा' रचना में व्यंग्य के तेवर दिखाई देते हैं । 'नरक की जीत' रचना में कानून के हिमायती वकील, जज और पुलिस धरती से मरने के बाद सीधे स्वर्ग गए । इसलिए स्वर्ग की जायज बात भी कानूनी कार्यवाही की धमकी से नहीं हो पाती । 'कफन चोर का बेटा' इस रचना में हर बाप की इच्छा होती है कि बेटा सवाई निकले । बेटे से बाप अच्छा था ऐसा लोग कहें इस लालसा को कथ्य बनाया है । कफनचोर हमीदा की इच्छा थी कि मरने के बाद लोग उसे अच्छा कहें । इस इच्छा को बेटे अल्लादिया ने पुरा कर दिखाया है ।

''अमां, इस हराम जादे अल्लादिया से तो हमीदा लाख दर्जे अच्छा था । सिर्फ एक बार ही तो कफन चुराता । एक लाश के ऊपर से और लाश की बेईज्जती भी करता है, सो अलग । हाय, हमीदा कितना अच्छा था ।''[१०९] इस प्रकार उषाबाला ने 'कफन चोर का बेटा' में समाज जीवन की विसंगतियों को आक्रोशात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

स्वातंत्र्यपुर्व कालीन व्यंग्यात्मक निबन्ध ऐसा शस्त्र था, जिससे निबन्धकारों ने अंग्रेजो पर प्रहार करते हुए इस काल की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीति, लेखक, समाजसुधारक नेता आदि विविध विषय पर व्यंग्यात्मक निबन्ध की सृजना की है । लगभग सभी प्रमुख निबन्धकारों ने व्यंग्य निबन्ध के क्षेत्र में अपना योगदान देते हुए उसे विकसित किया है ।

सार रुप में कहा जा सकता है कि, निबन्ध साहित्य में अन्य विविध विधाओं की तुलना में व्यंग्य का सर्वाधिक सफल प्रयोग हुआ है, इस परम्परा में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकून्द गुप्त, सरदार पूर्णसिंह, पं. चन्द्रधर शर्मा, बाबु गुलाबराय, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, बख्शी आदि व्यंग्य निबन्धकारों ने स्वातंत्र्यपूर्व कालीन स्थितियों पर विविध विषय को लेकर व्यंग्य किये हैं। हिन्दी व्यंग्य निबन्ध साहित्य में जीवन के हर क्षेत्र को बेपर्दा करते हुए, विसंगति, बेईमानी, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार आदि के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा निबन्धकारों ने पाठक को दी है ।

निष्कर्ष :

१) भारतीय वाङ्मय में वैदिक काल से व्यंग्य का अस्तित्व विद्यमान रहा है।

२) संस्कृत काव्यशास्त्रों में भी व्यंग्य का विवेचन बीज रुप में हुआ है ।

३) संस्कृत साहित्य में व्यंग्य को प्राय: ध्वनि और अंलकार सम्प्रदाय के अन्तर्गत ही लिया गया है ।

४) प्राकृत व्यंग्य साहित्य में 'हरिभद्रसुरि' का नाम उल्लेखनीय है ।

५) अपभ्रंश साहित्य में जैनियों तथा सिद्धों द्वारा बाह्य अनुष्ठानों का खण्डन किया गया है, जिसमें व्यंग्य मिलता है ।

६) विश्व-व्यंग्य साहित्य के संदर्भ में देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि, व्यंग्य का बुटा भारतीय साहित्य में प्रस्फुटित हुआ है ।

७) ग्रीक साहित्य के आरम्भिक युग में आरकीलोकस, एमोरगस और हिप्पोनेक्स महान व्यंग्यकार हुए है ।

८) रोमन व्यंग्यकारो में सर्वप्रथम 'लूसी लियस' का नाम आता है ।

९) अंग्रेजी में 'बटलर' का नाम आरम्भिक व्यंग्य साहित्यकारों में लिया जाता है।

१०) 'कन्हपा' और 'सरहपा' आदि सिद्धों की रचनाओं में भी व्यंगोक्तियाँ मिल जाती हैं ।

११) हिन्दी साहित्य के वीरगाथा काल में व्यंग्य का आरंभ हो जाता है, जो भक्तिकाल, रीतिकाल तक पद्य साहित्य में विद्यमान रहा हैं । हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में पद्य के साथ गद्य की विविध विधाओं में व्यंग्य उपन्यासों, कहानियों, नाटकों, एकांकियों एवं निबंधों में प्रचुर मात्रा में मिल जाता है ।

१२) भक्तिकाल में व्यंग्य का सशक्त सूत्रपात हुआ है, जिसमें कबीर, सूरदास, तुलसीदासने, सामाजिक अनीतियों, राजनीतिक विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक प्रहार किये है । कबीर इस काल के श्रेष्ठ व्यंग्यकार रहे है । कबीर ने प्रचलित कर्मकाण्ड, बाह्याडम्बर तथा मिथ्याचारों की खुलकर निन्दा की है । कबीर के समकालीन अन्य प्रमुख कवियों में भी व्यंग्य की साधना मुख्य रुप से दिखाई देती है ।

१३) रीतिकालीन साहित्य श्रृंगाररस प्रधान होते हुऐ भी इस काल में कहीं-कहीं व्यंग्य की झलक मिल जाती है । बिहारी के अतिरिक्त रहीम, वृन्द देव आदि के काव्य में भी व्यंग्योक्ति उपालम्भ, ताने आदि के रुप में व्यंग्य रचनाएँ मिलती हैं । गोपियाँ कृष्ण का भेजा निर्गुणोपासना का संदेश लाने पर उद्धव से उपालंभ एवं ताने देती है जिसमें व्यंग्य भरा है ।

१४) आधुनिक काल का साहित्य पुरानी मान्यताओं से आगे निकला है । इसमें नये प्रयोग हुए है । एवं शिल्प की दृष्टि से नये क्षितिज हुए है । इस काल के कवियों में भारतेन्दु, अयोध्यासिंह उपाध्याय, प्रसाद, दिनकर, निराला, नागार्जुन, आदि

कवियों के कविता में विकृति से लोहा लेने की शक्ति समाहित है । आधुनिक काल में निराला, नागार्जुन और धूमिल श्रेष्ठ व्यंग्यकार हैं ।

१५) आधुनिक उपन्यासकारों ने यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए विरोधाभासपूर्ण स्थिति, विसंगति विद्रुपताओं का पर्दा फाश किया है एवं प्रतिक शैली में आक्रोश पूर्ण व्यंग्य का सृजन किया है ।

१६) कहानी में व्यंग्य सही तौर पर परसाई और शरद जोशी के लेखन के साथ ही आया, प्रेमचंदजी के कहानियों में भी व्यंग्य की छटा जरूर मिलती है। अन्य कहानिकारों के कहानियों में व्यंग्य ओत-प्रोत हुआ दिखाई देता है।

१७) नाटकों में भारतेन्दु हरिश्चंद्र के 'भारत दूर्दशा' नाटक से भारतीयों की दुर्बलताओं हीनताओं का चित्रण आरंभ होता है । इस परम्परा को जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश, डॉ. लाल, गिरिराज किशोर, अमृत नहाटा, भीष्म सहानी एवं शंकर शेष आदि नाटककारों ने निभाया है । इन्होंने जीवन की विसंगतियों का पर्दाफाश किया है ।

१८) आधुनिक हिंदी एकांकीकारों ने ऐकांकियों का सफल मंचन किया है, एवं व्यंग्य के जरिये कथ्य को तेज, बना दिया है । इसमें डॉ.रामकुमार वर्मा,शरद जोशी,विष्णू प्रभाकर आदि प्रमुख व्यंग्य एकांकीकारों के नाम उल्लेखनय है ।

१९) निबंध साहित्य में अन्य विधाओं की तुलना में व्यंग्य का सर्वाधिक सफल प्रयोग हुआ है, इस परम्परा में भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी, बाल मुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, सरदार पूर्णासिंह, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, आचार्य रामचंन्द्र शुक्ल, पदुमलाल बक्षी, हरिशंकर शर्मा, हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी,

बरसानेलाल चतुर्वेदी, केशवचंद्र वर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी,रोशन लाल सुरीवाला,लतीफ घोंघी, नरेंद्र कोहली, श्रीलाल शुक्ल, इंद्रनाथ मदान , उषा बाला आदि निबंधकारोंने व्यंग्य निबंध साहित्य के विकास में अपना योगदान दिया है । इन निबंधकारों ने जीवन के हर क्षेत्र को बेपर्दा करते हुऐ, विसंगतिओं के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा पाठक को दी है ।

संदर्भ :

१) उद्धृत डॉ. उषा शर्मा- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य,पृ.६१

२) उद्धृत- रामखेलावन पाण्डे - हिंदी साहित्य कोश भाग - एक,पृ.७४१

३) डॉ.उषा शर्मा- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध साहित्य में व्यंग्य,पृ.८०

४) उद्धृत - डॉ.बापूराव देसाई -हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर आयाम पृ.१६

५) उद्धृत - डॉ.बापूराव देसाई - हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर अयाम पृ.१७

६) हरिषेण - धम्मपरिक्खा - पाँचवी संधि

७) कवि रामसिंह - पाहुडदोहा

८) रामखेलावन पाण्डे - व्यंग्यगीति,पृ. ८०५

९) एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका - खाण्ड बीस पु.५

१०) एनसाइक्लो पीडिया ब्रिटीनिका - खाण्ड बीस,पृ. ५

११) उद्धृत - डॉ.उषा शर्मा- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध सहित्य में व्यंग्य, पृ.२०

१२) उद्धृत - डॉ.उषा शर्मा- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी निबंध सहित्य में व्यंग्य, पृ.२०

१३) सं.सत्यजीवन वर्मा - बीसलदेव रासो,-तृतीय सर्ग, छन्द -४१

१४) उद्धृत डॉ. नगेन्द्र-हिंदी साहित्य का इतिहास-पृ. ७०

१५) कालिकाल रासो,४,३८

१६) कबीर साखी संग्रह - प्रकाशक -वेलडियर प्रेस इलाहाबाद,पृ. १७८,साखी संख्या १०

१७) कबीर साखी संग्रह - प्रकाशक -वेलडियर प्रेस इलाहाबाद,पृ.१७८,साखी संख्या १०

१८) कबीर साखी संग्रह - प्रकाशक -वेलडियर प्रेस इलाहाबाद,पृ.१७८,साखी संख्या १३,१४

१९) सं.योगेंद्र प्रताप सिंह - सूरदास- भ्रमगीत-प्रसंग एवं मध्यकालीन काव्य - भारती,पृ. ८०

२०) तुलसीदास-रामचरित्रमानस,बालकाण्ड-१३४

२१) तुलसी सतई -पृ.३९१

२२) जायसी-पद्मावत- छन्द संख्या,३०४

२३) बिहारी बोधिनी -छन्द संख्या - २६८

२४) जगनाथ रत्नाकर -बिहारी रत्नाकर पृ. ६३

२५) रहीमन विनोद - छ.संख्या -३२

२६) डॉ.सारस्वत - घनानंद वैभव - छंद संख्या -३३

२७) उद्धृत डॉ.बापूराव देसाई, हिंदी व्यंग्य विधाशस्त्र और इतिहास,पृ. ९०

२८) भारतेन्दू-भारत दूर्दशा. पृ. संख्या २७

२९) उद्धृत डॉ.बापूराव देसाई- हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर आयाम,पृ. १७७

३०) उद्धृत डॉ.बापूराव देसाई- हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर आयाम,पृ. १७८

३१) उद्धृत डॉ. बापूराव देसाई-हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर आयाम,पृ. १७९

३२) उद्धृत डॉ.बापूराव देसाई- हिंदी,मराठी व्यंग्य समांतर आयाम,पृ. १७९

३३) नागार्जुन युगधारा-डॉ. शेरजंग गर्ग-स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में पृ. ११३

३४) नागार्जुन- रत्नगर्भ - पृ.सं.१७

३५) डॉ.शेरजंग गर्ग - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य -पृ. २८२

३६) डॉ.बापूराव देसाई - हिंदी मराठी व्यंग्य समांतर आयाम पृ. १८३

३७) डॉ.रामस्वरुप चतुर्वेदी - हिंदी,नवलेखन,पृ.सं.५१

३८) धूमिल - संसद से सड़क तक -(फ्लॉप से-अशोक वाजपेयी)

३९) धूमिल - संसद से सड़क तक -(फ्लॉप से-अशोक वाजपेयी)

४०) धूमिल - संसद से सड़क तक - पृ. ३७

४१) उद्धृत - डॉ.स्मिता चिपळूणकर - हिंदी के प्रमुख व्यंग्यकार, पृ.१८९

४२) सं.काका हाथरसी तथा गिरिराज शरण -श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य,कविताएँ -पृ. १०६

४३) सं.काका हाथरसी तथा गिरिराज शरण -श्रेष्ठ हास्य व्यंग्य,कविताएँ - पृ. १४४

४४) प्रेमचंद -गोदान -पृ. १८२

४५) जी.पी.श्रीवास्तव-लतखोरीलाल- पृ. २०६

४६) उद्धृत डॉ.नंदलाल कल्ला-हरिशंकर परसाई और नागफनी की कहानी- पृ. ८२

४७) नागार्जून- हरिक जयंती,पृ. १६

४८) श्रीलाल शुक्ल- राग दरबारी- पृ. २१

४९) डॉ. श्यामसुंदर घोष- एक उल्लूक की कथा पृ. ११४

५०) नरेंद्र कोहली- अश्रिता का विद्रोह,पृ. ७६

५१) डॉ.शंकर पुणतांबेकर- एक मंत्री स्वर्ग लोक में,पृ. २६

५२) डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी- दर्पण झूठ न बोले,पृ. ७

५३) प्रेमचंद पचीसी (बूढ़ी काकी) पृ. १३३

५४) प्रेमचंद- दो बैलों की कथा- प्रस्तावना

५५) मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ-३६९

५६) उद्धृत-सं.डॉ.रामगोपाल शर्मा- कथाश्री, पृ.१७६

५७) हरिशंकर परसाई- राग- विराग(सं.विश्वम्भर नाथ उपाध्य गद्यरंजन)- पृ. १०२

५८) रवींद्रनाथ त्यागी- प्रतिनिधी रचनाएँ (सं.डॉ.कमलकीशोर गोयका) पृ.७३

५९) रवींद्रनाथ त्यागी- प्रतिनिधी रचनाएँ (सं.डॉ.कमलकीशोर गोयका) पृ.८६

६०) नरेंद्र कोहली- जगाने का अपराध- पृ.१३६

६१) नरेंद्र कोहली- समग्र व्यंग्य- पृ.२०

६२) श्रीलाल शुक्ल-मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ- पृ. ६७

६३) प्रेमजनमेय- राजधानी में गँवार- पृ. ९८

६४) डॉ.बालेंदुशेखर तिवारी- रिचर्स गाथा- पृ. ५

६५) भारतेंदु हरिश्चंद्र- भारत दुर्दशा- पृ. २७

६६) भारतेंदु हरिश्चंद्र- भारत दुर्दशा- पृ. २७

६७) ध्रुवस्वामिनी-प्रसाद ग्रंथावली (प्रसाद वाङ्मय) खण्ड-२ पृ. ७६९

६८) मोहन राकेश- आधे अधुरे पृ. ८८

६९) डॉ. माधव सोनटक्के-समकालीन नाट्य विवेचन- पृ. ९४

७०) अमृत नाहटा- किस्सा कुर्सीका, पृ. ९४

७१) ज्ञानदेव अग्निहोत्री-शुतुर मुर्ग- पृ. ७२-७३

७२) डॉ.नरनारायण राय-समकालीन हिन्दी नाटक-पृ. ६०

७३) डॉ. नरेन्द्र कोहली-शंबुक की हत्या, पृ. १३

७४) डॉ.नरनारायण राय-समकालीन हिन्दी नाटक-पृ. ४०

७५) शरद जोशी - अन्धों का हाथी- पृ.९४

७६) शरद जोशी- एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ, पृ. ४७

७७) भीष्म साहनी-कबीर खडा बजार में पृ. १०२

७८) उधृत डॉ. देवीदास इंगळे-राम गोविन्द स्मरणिका-पृ. ३२

७९) डॉ.सरजू प्रसाद मिश्र- नाटककार लक्ष्मीनारायणलाल-पृ. ४९

८०) डॉ. सुरेश माहेवरी-स्वातंत्र्योत्तर-हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन - पृ.सं.६३

८१) लतीफ घोंघी-किस्सा दाढी का, पृ. ११३

८२) रवीन्द्रनाथ त्यागी- फुटकर, पृ. ७७

८३) शरद जोशी- किसी बहाने, पृ. १२६

८४) डॉ. बापूराव देसाई- हिन्दी व्यंग्य और विधा शास्त्र और इतिहास-पृ.स.२१७

८५) शरद जोशी-रहा किनारे बैठ-पृ. ४७

८६) डॉ. मांगीलाल उपाध्याय-व्यंग्य और भारतेन्दु युगनी गद्य-पृ. १७७

८७) डॉ. विभुराम मिश्र- प्रतिनिधी हिन्दी-निबन्धकार-पृ. ३८

८८) डॉ. विभुराम मिश्र- प्रतिनिधी हिन्दी-निबन्धकार-पृ. ३८

८९) डॉ. विभुराम मिश्र- प्रतिनिधी हिन्दी-निबन्धकार-पृ. ३८

९०) ब्रजरत्नदास-भारतेन्दु ग्रंथावली-पृ. ८३६

९१) बालकृष्ण भट्ट-नाक निबन्ध -पृ.१५

९२) बालकृष्ण भट्ट- अकिल अजीरन रोग,-पृ.२५

९३) सं. लक्ष्मीनारायण टण्डन- हिन्दी गद्य सौरभ-पृ. ५७

९४) सं. डॉ. संसारचंद्र -हिन्दी हास्य-व्यंग्य निबंध-रुपयात्रा, पृ. १२५

९५) डॉ. राजकिशोर सिंह-डॉ. उषा यादव-हिन्दी के प्रतिनिधी निबन्धकार-पृ.४५

९६) पं. प्रतापरानायण मिश्र ग्रंथावली खण्ड-१-पृ. २८६

९७) बदरीनाथ नारायण चौधरी-प्रेमधन भाग-२-पृ. २२२-२२३

९८) सं. डॉ. संसारचंद्र- हिन्दी हास्स- व्यंग्य निबन्ध, रुप यात्रा, पृ. १२७

९९) सं. लक्ष्मीनारायण- हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास-त्रयोदश भाग-पृ.१०३

१००) डॉ. विभुराम मिश्र-प्रतिनिधी हिन्दी निबन्धकार, पृ. ७२

१०१) डॉ. विभुराम मिश्र-प्रतिनिधी हिन्दी निबन्धकार, पृ.७२

१०२) स. लक्ष्मीनारायण-हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास-पृ. १०९

१०३) डॉ. विभुराम मिश्र- प्रतिनिधी हिन्दी निबन्धकार-पृ. १११

१०४) सं. कुरुणापति त्रिपाठी-गद्य संकलन-पृ. १०४

१०५) आ. रामचन्द्र शुक्ल-चिंतामणी भाग-एक, पृ. ३०

१०६) आ.रामचन्द्र शुल्क-चिंतामणी भाग-एक पृ. २०

१०७) गंगाप्रसाद गुप्त-हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार-पृ.२४२,२४३

१०८) गंगाप्रसाद गुप्त-हिन्दी साहित्य में निबन्ध और निबन्धकार-पृ.२६०,२६४

१०९) उषाबाला-कफन चोर का बेटा-पृ. ७४

---०००---